'मृत्यु के निकट अनुभव' यह नहीं दर्शाते कि जीवन के बाद भी कुछ है, बल्कि यह दर्शाते हैं कि प्रेमपूर्ण संगति में अच्छी तरह से मृत्यु संभव है। वे हमें मृत्यु के बारे में कुछ गहन और सुंदर बातें बताते हैं। वे हमें अपनी यात्रा के अगले भाग का सामना करने के लिए झूठी आशा नहीं, बल्कि वास्तविक उम्मीद देते हैं, चाहे वह जो भी लेकर आए।

क्या 'मृत्यु के निकट अनुभव' वास्तविक हैं?

'मृत्यु के निकट अनुभव' बताते हैं कि मृत्यु इतनी भयावह नहीं भी हो सकती है, जितनी अमूमन उसे समझा जाता है। मृत्यु दो दुनियाओं के बीच का दरवाजा भी हो सकती है। मुमकिन है कि उस पार कुछ ऐसा इंतजार कर रहा हो, जिसके बारे में हमने अपने सबसे सुंदर ख्वाब में भी न सोचा हो।

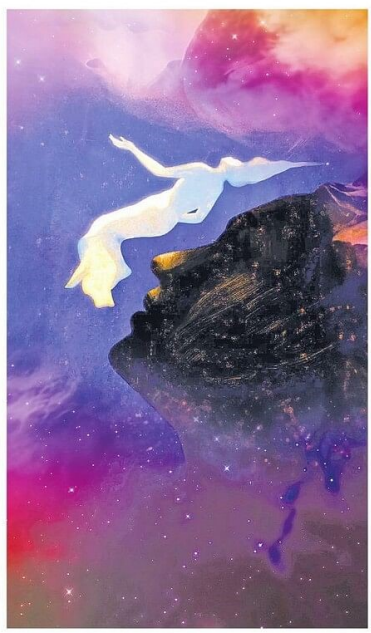

जॉन मार्टिन फिशर
द न्यूयॉर्क टाइम्स

आखिर मरने के बाद होता क्या है? विभिन्न धर्मों के दर्शन में इस पर तमाम विचार मिलते हैं, लेकिन क्या मालूम वे सच हैं भी या नहीं? जब तक कोई खुद अपनी आंखों से न देखे, तब तक कैसे मान ले कि मृत्यु के बाद हम जाते कहां हैं। कोई जाने के बाद लौट कर आया हो, और वह बताए, तो एक बार को मान भी लें। हालांकि इस दुनिया में कई लोग ऐसे हैं, जो मृत्यु को छूकर वापस लौटे। यानी, कुछ पल के लिए मर गए, लेकिन फिर वह लौटे। मृत्यु के निकट के ये अनुभव विस्मय को जगाते हैं- वे हमें 'ईश्वर की नजर' से यह देखने का मौका देते हैं कि वास्तव में इससे परे क्या है। वे हमें ब्रह्मांड के किनारे तक ले जाते हैं। हालांकि यह बिल्कुल वैज्ञानिक विचार नहीं है, लेकिन हममें से ज्यादातर लोगों को इस बात की एक आम समझ है कि 'मृत्यु के निकट अनुभव' का क्या मतलब है।

जाहिर है, मृत्यु के निकट अनुभव का मतलब एक ऐसी स्थिति से है, जिसमें किसी का जीवन खतरे में होता है। जिन लोगों ने इसका अध्ययन किया है या इस पर चर्चा की है, उनमें से अधिकांश इस बात पर सहमत हैं कि 'मृत्यु के निकट अनुभव' के रूप में गिनने के लिए ऐसा अनुभव तब होना चाहिए, जब व्यक्ति पूरी तरह सचेत न हो और उसमें निम्नलिखित पहलू पर्याप्त हों : शरीर से परे होने का अनुभव, जिसमें व्यक्ति को भौतिक रूप से ऊपर तैरने का अनुभव होता है और वह खुद को तथा अपने आसपास के वातावरण को देख सकता है। ऐसे में व्यक्ति अपने जीवन की समीक्षा करता है, और मृतक परिजनों या पूज्य धार्मिक व्यक्तियों द्वारा संरक्षित क्षेत्र (गहन अंधेरे में रोशनी, द्वार या बाड़ से घिरा क्षेत्र, नदी के दूसरे किनारे) की ओर बढ़ने का मार्गदर्शन पाता है। कई लोग जो 'मृत्यु के निकट अनुभव' से गुजर चुके हैं, वे गंभीरतापूर्वक बदलाव की बात करते हैं- उन्हें मृत्यु का भय कम सताता है, वे ज्यादा आध्यात्मिक, ज्यादा सकारात्मक एवं मददगार होते हैं। वे नैतिकता के प्रति ज्यादा चिंतित होते हैं। ऐसे अनुभव पूरे इतिहास में और विभिन्न संस्कृतियों में पाए जाते हैं।

प्लेटो ने द *रिपब्लिक* में इनमें से एक का वर्णन किया है-एर का मिथक। (यह एर नामक एक सैनिक की कहानी है, जिसे मरा हुआ मान लिया जाता है और वह पाताल लोक में चला जाता है। पर जब वह पुनर्जीवित होता है, तो उसे लोगों को यह बताने के लिए भेजा जाता है कि परलोक में कौन-सी चीज उनका इंतजार कर रही है। एर परलोक का वर्णन करता है, जहां दंडालु को पुरस्कृत किया जाता है और दुष्टों को दंडित किया जाता है।) 'मृत्यु के निकट अनुभव' आंशिक रूप से व्यक्ति की जीवन स्थिति, धर्म और संस्कृति के विवरण पर निर्भर होते हैं, लेकिन कुछ सामान्य तत्व भी हैं। उदाहरण के लिए, धार्मिक आकृतियां अलग-अलग हो सकती हैं-एक ईसाई को ईसाई आकृतियां दिखाई देंगी, एक बौद्ध को बौद्ध आकृतियां दिखाई देंगी और एक हिंदू को 'मृत्यु के निकट अनुभव' में हिंदू देवी-देवताओं की आकृतियां दिखाई देंगी। फिर भी गहरे स्तर पर सम्मानित व्यक्तियों द्वारा मार्गदर्शन मिलता है, तथा ज्ञात से अज्ञात की ओर यात्रा होती है। यह शायद सबसे कठिन यात्रा है, जीवन से मृत्यु तक। हमारी अंतिम यात्रा या हमारी यात्रा के अंतिम चरण पर प्रेमपूर्ण मार्गदर्शन गहरा प्रभाव डालता है। लोकप्रिय साहित्य में 'मृत्यु के निकट अनुभव' की व्याख्या लगभग हमेशा 'अलौकिक रूप से' की जाती है। मानो वे यह दिखाते हैं कि मन मस्तिष्क जैसा नहीं है और मस्तिष्क के काम करना बंद करने के बाद भी मन सक्रिय रह सकता है, और यह भी कि मन का किसी तरह से 'स्वर्ग' या गैर-भौतिक क्षेत्र से संपर्क होता है। 'मृत्यु के निकट अनुभव' से संबंधित पुस्तकों के शीर्षक बताते हैं कि 'स्वर्ग वास्तव में होता है' या हमारे पास 'स्वर्ग का सबूत' है। इन मुद्दों पर लिखने वाले न्यूरोसाइंटिस्ट दावा करते हैं कि 'मृत्यु के निकट अनुभव' 'मृत्यु के बाद के जीवन का सबूत' और 'जीवन से परे चेतना' प्रदान करते हैं। वे उन्हें मृत्यु के बाद की यात्रा मानते हैं।

अलौकिक व्याख्या के समर्थक इस पर जोर देते हैं कि वे 'वास्तविक' हैं। न्यूरोसर्जन एबेन एलेक्जेंडर ने *प्रूफ ऑफ हेवन* में *अल्ट्रा-रियल* शीर्षक से एक अध्याय भी है। मैं इससे इन्कार नहीं करता कि बहुत से लोगों के पास 'मृत्यु के निकट अनुभव' हैं। उनके पास सचमुच ऐसे अनुभव हैं, जैसे लोग सपने देखते हैं। इसलिए ये अनुभव प्रामाणिक रूप में वास्तविक हैं। इससे इन्कार करना उन बहुतेरे लोगों का अनादर करना है, जो ईमानदारी से इसके बारे में बताते हैं। हालांकि 'वास्तविक' का एक और अर्थ है सटीक। क्या मृत्यु के निकट अनुभव की जो शाब्दिक व्याख्या की गई, वह परलोक की वास्तविकता का सटीक चित्रण है? यह एक अलग महत्वपूर्ण प्रश्न है। लेकिन वास्तविक मानते हुए सटीक न मानना महत्वपूर्ण है और कई अलौकिकतावादी यही करते हैं। मृत्यु के निकट अनुभव वास्तव में होते हैं। लेकिन इनसे हम यह अनुमान नहीं लगा सकते कि वे मृतक प्रियजनों द्वारा गैर-भौतिक क्षेत्र में मार्गदर्शन को सटीक रूप से दर्शाते हैं। बड़ा सवाल है कि क्या मृत्यु के निकट अनुभव स्वर्ग या नरक का सबूत देते हैं? मैं ऐसा नहीं मानता। इनमें से कोई भी तर्क ठोस नहीं है। ये स्पष्ट रूप से ज्वलंत सपने और मतिभ्रम हैं। नशीले पदार्थों के सेवन से होने वाले अनुभव भी गहरे और परिवर्तनकारी होते हैं। ये सभी अनुभव विषय-वस्तु को 'अति-वास्तविक' रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह किसी भी आध्यात्मिक अनुभव की एक चिर-परिचित विशेषता है, और मृत्यु का निकट अनुभव एक तरह का आध्यात्मिक अनुभव है। दुनिया भर में लोग अपने धर्मों में ईमानदारी और निश्चित विश्वास रखते हैं, लेकिन इस ईमानदारी और निश्चितता से यह अर्थ नहीं निकलता है कि धार्मिक विश्वास सत्य है और उसकी शब्दश: व्याख्या की गई है। मौलिक अंतरों को देखते हुए वे सत्य कैसे हो सकते हैं? यही बात 'मृत्यु के निकट अनुभव' के साथ है। 'मृत्यु के निकट अनुभव' की अलौकिक व्याख्या के लिए दिए जाने वाले तर्क स्पष्ट रूप से समस्याग्रस्त हैं। कई डॉक्टर इस विचार का समर्थन करते हैं कि 'मृत्यु के निकट अनुभव' पुनर्जन्म के अस्तित्व को साबित करते हैं। मगर उनके निष्कर्ष चिकित्सकीय नहीं, बल्कि दार्शनिक हैं। यह विचार कि मन शरीर से अलग हो सकता है और स्वर्ग (गैर-भौतिक क्षेत्र) से संपर्क कर सकता है, स्पष्ट रूप से चिकित्सा निष्कर्ष नहीं है, और चिकित्सकों के पास इस मामले में कोई विशेषाधिकार नहीं है। आखिरकार, वे चिकित्सक हैं, तत्वमीमांसक नहीं।

'मृत्यु के निकट अनुभव' की अधिक विश्वसनीय व्याख्या करने के लिए जरूरी है कि वे दोनों अर्थों में वास्तविक हों-यानी वे वास्तव में घटित होते हों और उनकी व्याख्या सटीक हो। मेरा मानना है कि 'मृत्यु के निकट अनुभव' की व्याख्या मूल रूप से और मुख्य रूप से जीवन से मृत्यु तक की यात्रा के बारे में होनी चाहिए। अधिकांश 'मृत्यु के निकट अनुभव' एक काल्पनिक संरक्षित क्षेत्र की ओर यात्रा को दर्शाते हैं, लेकिन उस तक पहुंचने के सफल मार्ग को नहीं। 'मृत्यु के निकट अनुभव' में हम कयामत के द्वार तक तो पहुंच जाते हैं, लेकिन उसके पार नहीं जा पाते। हम ब्रह्मांड के किनारे तक तो पहुंच जाते हैं, लेकिन वहीं रुक जाते हैं। 'मृत्यु के निकट अनुभव' यह नहीं दर्शाते कि जीवन के बाद भी कुछ है, बल्कि यह दर्शाते हैं कि प्रेमपूर्ण संगति में अच्छी तरह से मृत्यु संभव है। इस प्रकार 'मृत्यु के निकट अनुभव' दोनों ही अर्थों में वास्तविक हैं: वे वास्तव में घटित होते हैं, और इन संभावनाओं को सटीक रूप से चित्रित करते हैं। वे महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे हमें अच्छी तरह से मृत्यु की संभावना की याद दिलाते हैं। वे हमें मृत्यु के बारे में कुछ गहन और सुंदर बातें बताते हैं। वे हमें अपनी यात्रा के अगले भाग का सामना करने के लिए झूठी आशा नहीं, बल्कि वास्तविक उम्मीद देते हैं, चाहे वह जो भी लेकर आए।

शांत दिमाग के पीछे का विज्ञान

एवं व्यवसिते लोके
बहुदोषे युधिष्ठिर।
आत्ममोक्षनिमित्तं वै
यतेत मतिमान नरः।।

अर्थात हे युधिष्ठिर! मनुष्य यह स्वीकार ले कि वह जगत में अनेक दोषों से परिपूर्ण है और फिर अपने मोक्ष के लिए प्रयत्न करे। यही बुद्धिमान व्यक्ति का लक्षण है। (अर्थात पहले स्वीकार और फिर सुधार के लिए प्रयत्न।)

शांतिपर्व 174/5
(युधिष्ठिर के प्रति महामन भीष्म का उपदेश)

प्रस्तुति : **विवेक चौरसिया**

कभी आपके साथ ऐसा हुआ कि आपने कोई संगीत सुना और उसमें डूब गए, या कुछ लिखने बैठे, तो मन इतना शांत रहा कि हर शब्द के पीछे रचनात्मक ऊर्जा महसूस होने लगी हो, या आप कोई फिल्म देख रहे हैं, और उसमें इतना खो गए कि कुछ समय तक दुनिया को ही भूल गए? कोई थकावट नहीं हुई। इसके उलट कई बार ऐसा होता है कि लिखने बैठते हैं, तो पूरा समय चला जाता है, फिर भी हम सटीक ढंग से उस बात को नहीं लिख पाते, जो हम लिखना चाहते हैं। लेकिन जब हम सही मनोदशा में होते हैं, तो लगभग बिना कलम रोके लिखते चले जाते हैं। यही रचनात्मक प्रवाह होता है। लेकिन क्या आपने सोचा है कि इस दौरान हमारे दिमाग में कौन-सी रासायनिक क्रियाएं चल रही होती हैं? फिलाडेल्फिया में ड्रेक्सेल विश्वविद्यालय में मनोवैज्ञानिक और मस्तिष्क विज्ञान के प्रोफेसर का कहना है कि

गेमा वेयर
द कन्वर्सेशन

जब कभी शांत महसूस कर रहे हों और हर कार्य में आनंद का बोध हो, तो यह रसायनों का उत्पात नहीं, बल्कि रचनात्मक ऊर्जा का प्रवाह है।

रचनात्मक प्रवाह में हमें मस्तिष्क पर बहुत जोर नहीं देना पड़ता है। पूरा ध्यान काम पर होता है। यह आनंददायक होता है और कोई चिंतन नहीं होती। हम बागवानी करते, खाना बनाते, बातचीत करते, संगीत सुनते, या लिखते समय इसका अनुभव कर सकते हैं। जब हमारे मस्तिष्क में रचनात्मक प्रवाह होता है, तो सारी समस्याओं का समाधान तुरंत होता है। आमतौर पर जब हम रचनात्मक प्रवाह में होते हैं, तो समय कब और कितनी जल्दी बीत जाता है, हमें पता ही नहीं चलता। मनोवैज्ञानिक रचनात्मक प्रवाह के बारे में 50 साल से भी अधिक समय से शोध कर रहे हैं, जिसकी शुरुआत मनोवैज्ञानिक मिहाली सिक्सजेंटमिहाली ने की थी। वैज्ञानिकों ने मस्तिष्क के बाएं और दाएं, दोनों हिस्सों द्वारा किए जाने वाले विशिष्ट कार्यों की पहचान की है। 1990 के दशक में न्यूरो-साइकोलॉजिस्ट एल्खोनन गोल्डबर्ग ने बताया कि मस्तिष्क के दो गोलार्ध अनुभूति और रचनात्मकता में अलग-अलग भूमिका निभाते हैं। इसलिए जब आप कुछ नया सीख रहे होते हैं, तो दायां गोलार्ध इसमें शामिल होता है। जब आप इसमें अभ्यस्त हो जाते हैं, तो यह कौशल बाएं गोलार्ध में स्थानांतरित हो जाता है। बायां गोलार्ध ही हमें सुनने-समझने में मदद करता है। जब हम किसी युवा संगीतकार की धुन में किसी कमी की ओर इशारा करते हैं, तो वह नई धुन पर मेहनत करता है और ज्यादा रचनात्मक ऊर्जा के साथ आता है। पर पुराने संगीतकार झल्लाने लगेंगे और कहेंगे कि उनकी हर धुन में रचनात्मकता है। दरअसल, ऊर्जा का यह रचनात्मक प्रवाह दिमाग की एक स्थिति को दर्शाता है, जिसे हर वक्त बरकरार नहीं रखा जा सकता। इसके लिए प्रयास करने पड़ते हैं।

जानना जरूरी है
संस्कृति के पन्नों से

आशुतोष गर्ग
लेखक एवं अनुवादक

गरुड़ जैसे ही वट-वृक्ष की शाखा पर बैठा, शाखा टूट गई। उसी शाखा से लटककर बालखिल्य ऋषिगण तपस्या कर रहे थे। इसलिए उसने शाखा को अपनी चोंच में पकड़ लिया और एक-एक पंजे में हाथी और कछुए को।

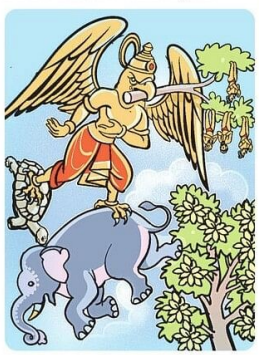

पक्षीराज गरुड़ को कैसे मिला यह नाम?

महर्षि कश्यप की दो पत्नियां थीं-कद्रू और विनता। एक शर्त के चलते विनता को कद्रू की दासी बनना पड़ा। विनता का ज्येष्ठ पुत्र अरुण सूर्य का सारथी बन गया। विनता के छोटे पुत्र गरुड़ ने अपनी मां को कद्रू की दासता से मुक्त कराने का बीड़ा उठाया। परंतु कद्रू ने विनता को दासत्व से मुक्त करने के लिए अमृत की मांग की। गरुड़ ने देवलोक जाकर अमृत लाने का निश्चय किया। देवलोक की यात्रा लंबी थी। मार्ग में गरुड़ को भूख लगी। गरुड़ की काया अति विशाल थी, इसलिए उसकी भूख शांत करना सरल नहीं था। वह इसका समाधान पूछने के लिए अपने पिता कश्यप के पास पहुंचा। कश्यप ने गरुड़ को एक कथा सुनाई-

धूप आवे दो

'प्राचीनकाल में विभावसु और सुप्रतीक नामक दो ऋषि-भाई थे। सुप्रतीक प्रायः पैतृक-संपत्ति के बंटवारे को लेकर विभावसु से लड़ता था। विभावसु ने कई बार अपने भाई को समझाया कि संपत्ति के लिए लड़ना विनाश और पतन का कारण बनता है। परंतु सुप्रतीक नहीं माना। फिर एक दिन विभावसु को क्रोध आ गया। उसने सुप्रतीक से कहा कि तुम संपत्ति के लिए सदैव मुझसे लड़ते हो। मैं तुम्हें शाप देता हूं कि तुम हाथी हो जाओ!' यह सुनकर सुप्रतीक ने भी क्रोध में विभावसु को शाप दिया-तुम कछुआ हो जाओ! दोनों भाई, एक-दूसरे के शाप से हाथी और कछुआ बनकर आजकल एक सरोवर के निकट रहते हैं। परंतु वे दोनों अब भी लड़ते रहते हैं। उनकी लड़ाई के कारण सरोवर में और उसके आसपास रहने वाले जीव-जंतु भी भयाक्रांत रहते हैं। हाथी की ऊंचाई छह योजन और कछुए की गोलाई दस योजन है। कछुआ मेघ-खंड जैसा तथा हाथी पर्वत के समान दिखता है। तुम उन दोनों को खोजकर अपनी भुख शांत कर लो और फिर अमृत लेने देवलोक जाओ।'

यह सुनकर गरुड़ तत्काल सरोवर के निकट पहुंचा। उसने देखा कि हाथी-कछुए में घमासान मचा था। दोनों का आकार देखकर गरुड़ को आश्चर्य हुआ। फिर भी गरुड़ के आकार से उनका कोई मुकाबला न था। गरुड़ ने एक ही झपट्टे में हाथी और कछुए को दबोच लिया और आकाश में उड़ गया। जल्द ही, गरुड़ उड़ता हुआ अलंबतीर्थ पहुंचा। उस पवित्र स्थान पर अनेक विशालकाय वृक्ष थे। गरुड़ ने सोचा कि विशाल वट-वृक्ष की शाखा पर बैठ कर आराम से हाथी और कछुए को खाया जा सकता है। वह जैसे ही वट-वृक्ष की शाखा पर बैठा, वह शाखा गरुड़, हाथी और कछुए के संयुक्त भार से टूट गई। संयोग से, उसी शाखा पर बालखिल्य नाम के ऋषिगण लटककर तपस्या कर रहे थे। गरुड़ ने उन्हें देखा, तो चिंता में पड़ गया। उसने सोचा कि यदि शाखा नीचे गिर गई, तो ऋषियों को चोट पहुंचेगी, इसलिए लपक कर उस शाखा को अपनी चोंच में पकड़ लिया। अब उसकी चोंच में शाखा थी और एक-एक पंजे में हाथी और कछुआ! उन सबको साथ लेकर गरुड़ फिर आकाश में उड़ गया।

यह अद्भुत दृश्य देखकर बालखिल्य ऋषिगण चकित रह गए। वे बोले, 'यह विलक्षण पक्षी अपने पंखों पर इतना भारी बोझ लेकर उड़ रहा है, अतः इसका नाम 'गरुड़' (अत्यधिक भार वहन करने वाला) होना चाहिए!'

इस बीच गरुड़ उस भार को लेकर उड़ता रहा। उसे कोई सुरक्षित स्थान नहीं सूझ रहा था। तब महर्षि कश्यप ने ही गरुड़ को एक ऐसे पर्वत का पता बताया, जहां अनेक गुफाएं और घाटियां थीं, जो सदैव बर्फ से ढकी रहती थीं। गरुड़ पंजों में हाथी व कछुआ तथा चोंच में शाखा को दबाकर उस पर्वत पर पहुंचा। फिर उसने वृक्ष की शाखा को वहीं सुरक्षित रख दिया। ऐसा करने से बालखिल्य ऋषियों को चोट नहीं पहुंची। फिर गरुड़ ने उसी पर्वत की एक ऊंची चोटी पर बैठकर हाथी और कछुए को मारकर खाया। गरुड़ की भूख शांत हो गई थी। कुछ देर विश्राम करने के उपरांत गरुड़ देवलोक जाकर अमृत ले आया और उसने अपनी माता विनता को दासता से मुक्ति दिलाई। इस तरह संपत्ति के लिए लड़ने वाले भाइयों का अंत हुआ और पक्षीराज 'गरुड़' को यह नाम मिला।

अध्ययन कक्ष

रे ऑन रे
ए सन रिमेम्बर्स

लेखक : अशोक नाग (पेपरबैक)

प्रकाशक : ओम बुक इंटरनेशनल
मूल्य : रुपये 284/-

आखिर 'रे' के दिमाग में चलता क्या था

रे ऑन रे, एक पुत्र की नजर से पिता को समझने का प्रयास है। यह पुस्तक उनके व्यक्तित्व के अनछुए पहलुओं के बारे में भी है। सत्यजीत रे अस्तित्व में घटी एक 'घटना' थे, जिसे पूरी तरह समझाने में यह किताब कारगर है।

सत्यजीत रे आइकन इसलिए हैं, क्योंकि उनका योगदान असंख्य तरीकों से एक संस्कृति को परिभाषित करता है। साठ वर्षों से भी ज्यादा समय से उनकी फिल्में बंगालियों की पहचान को पूरी दुनिया में आकार दे रही हैं। *सोनार केला, गूपी बाघा, प्रोफेसर शंकु* और *फेलुदा* तो तब भी और अब भी बंगाली बच्चों के डीएनए में समाए हैं। शायद ही कोई बंगाली या भारतीय होगा, जो *अपु ट्रायोलॉजी* या *नायक* और *चारुलता* जैसी उत्कृष्ट फिल्मों से प्रभावित न हुआ हो। क्या आपको पता है कि सत्यजीत रे ने टीवी सीरीज *किस्सा काठमांडू में* के लिए अभिताभ बच्चन का नाम सोचा था। पर वह हो नहीं सका।

सत्यजीत रे के रूप में अस्तित्व में जो घटा, उस पर रोशनी डालने के लिए पिछले कुछ दशकों में कई पुस्तकें लिखी गई हैं। मसलन, सौमित्र चटर्जी द्वारा लिखित द *मास्टर ऐंड आई*, बरुन चंद्रा की द *मैन हू न्यू टू मच* और खुद सत्यजीत रे की धर्मपत्नी बिजोया रे द्वारा लिखी गई बेहद अविस्मरणीय पुस्तक *मानिक ऐंड आई : माई लाइफ विद सत्यजीत रे*, पर इन सभी किताबों में कुछ जो छूट रहा था, वह था सत्यजीत रे के पुत्र संदीप रे का नजरिया, जिन्होंने वर्षों तक पिता के साथ काम किया और नजदीक से उन्हें देखा। अशोक नाग की यह किताब *रे ऑन रे*, इस रिक्त स्थान को भरने की एक कोशिश है, साथ ही दुनिया के महानतम फिल्म निर्माता के दिमाग को अपने पाठकों के सम्मुख खोलने का एक प्रयास भी है। हालांकि यह किताब संदीप रे के संस्मरणों के बगैर पूरी नहीं हो सकती थी। आखिर सत्यजीत रे के पुत्र ही फिल्म *अपूर संसार* के लिए शर्मिला टैगोर के लुक-टेस्ट का विवरण दे सकते थे, जब शर्मिला टैगोर एक के बाद एक साड़ियां पहन कर सत्यजीत रे के समुख खुद को फिल्म के लिए उपयुक्त दर्शाने की कोशिश कर रही थीं। या फिर, उनकी मशहूर फिल्म *गूपी गाइन बाघा बायने* में गूपी की भूमिका के लिए उनकी पहली पसंद किशोर कुमार थे। अशोक नाग की किताब बताती है कि *पाथेर पांचाली* फिल्म बनाते वक्त किस तरह सत्यजीत रे को अपनी पत्नी के जेवर तक गिरवी रखने पड़े थे। किताब बताती है कि जब सत्यजीत रे शूटिंग नहीं कर रहे होते, तो वह हर रविवार को मेहमानों को अपने घर बुलाते थे। फिर जो बैठक जमती थी, उसे वह अड्डा कहते थे। बंगाली भाषाशास्त्री सुनीति कुमार चटर्टोपाध्याय के अनुसार, अड्डा वह जगह है, जहां अंतरंग मित्र बैठकर दिल की बातें करते हैं। रविवार सुबह नौ बजे से शुरू होने वाले इस अड्डे में अभिनेता, साहित्यकार, पुराने दोस्त, कवि इत्यादि सभी बैठते थे। किताब बताती है कि सूरज तले जितने भी विषय हो सकते हैं, शायद उन सभी पर इन अड्डों में बात होती थी और कभी-कभी तो चर्चा का स्तर कुछ ज्यादा ही ऊंचा हो जाता था। *रे ऑन रे* किताब एक पुत्र की आंखों से परखती है कि सत्यजीत रे एक कलाकार और इन्सान के रूप में क्या थे। एक जीनियस पिता फिल्मों के क्राफ्ट को अपने बेटे को किस आसानी से समझाता है, किताब इस बारे में भी है। सत्यजीत रे की फिल्मों पर काफी कुछ लिखा गया है, लेकिन अशोक नाग की यह किताब सत्यजीत रे की शख्सियत के उन हिस्सों को भी समझाती है, जो अब तक अनछुए थे।

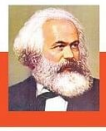

मूर्ख बनने के दो तरीके हैं। जो सत्य नहीं है, उस पर विश्वास करना। दूसरा, जो सच है, उसे मानने से इन्कार करना। -कार्ल मार्क्स

Hindi@mithelesh
■ मिथिलेश बारिया

गोल चबूतरा

जिन लोगों का सोना वक्त पर होता है,
उनकी चांदी ही चांदी है...

मैं दीवार पर चॉक से खिंचा विकेट क्रिकेट का,
तुम ओलंपिक का मेडल, जैसे कोई...

पहली बार दुनिया में 'हिप हॉप'

आज के ही दिन सन 1973 में न्यूयॉर्क शहर के पश्चिम ब्रॉक्स में एक इमारत के कमरे में किशोरों की एक बैक-टू-स्कूल पार्टी में हिप हॉप शैली का जन्म हुआ था। उस ऐतिहासिक पार्टी की अध्यक्षता क्लाइव कैंपबेल ने की थी। क्लाइव कैंपबेल को इतिहास में हिप हॉप शैली के संस्थापक 'डीजे कूल हर्क' के नाम से जाना जाता है।

झरोखा
11 अगस्त

जमैका के शहर किंग्स्टन में जन्मे और पले-बढ़े क्लाइव कैंपबेल ने महज 10 साल की उम्र से ही पार्टियों में और सेट पर अपने पिता के साथ बैंड बजाना शुरू कर दिया था। हर्क अक्सर अपनी बनाई धुनों पर 'टोस्टिंग' (बात करते हुए) जमैका की डीजे शैली का अनुकरण करते थे।

दरअसल, डीजे कूल हर्क ने इस बात का अध्ययन किया कि वह जो भी रिकॉर्ड बजा रहे हैं, उस पर भीड़ किस तरह से प्रतिक्रिया करती है? उन्होंने देखा कि लोग एक ही रिकॉर्ड की दो प्रतियों को बार-बार आगे और पीछे स्विच करने के तरीके से निकलने वाली धुन को सबसे अधिक सुनना चाहते हैं। उन्होंने इसे मैरी-गो-राउंड कहा, जिसे आज 'ब्रेक बीट' के नाम से जाना जाता है। काफी सुधार के बाद डीजे कूल हर्क ने इसे अपनी बहन की पार्टी में बजाया, जिसने 'हिप हॉप' शब्द के लोकप्रिय होने से पहले संगीत क्रांति शुरू कर दी थी।

■ जम्मू से अखिल कुमार

क्रांतिकारियों ने बलिदान देकर देश को आजादी दिलाई। अब देश की सीमाओं की सुरक्षा हमारे जांबाज सैनिक कर रहे हैं। लेकिन क्या हमें भी अपने-अपने क्षेत्र में ईमानदारी से काम करके देश को तरक्की के रास्ते पर नहीं ले जाना चाहिए?

अपने हिस्से की जिम्मेदारी तो निभाएं

हर काम में हो ईमानदारी

देश प्रेम की खातिर बहुत से नौजवानों ने खेलने-कूदने की उम्र में देश की आजादी की खातिर अंग्रेजों के जुल्म सहे और अपना सब कुछ, यहां तक कि जान भी कुर्बान कर दी थी। देश प्रेम का मतलब यह नहीं है कि हम सीमाओं पर जाकर देश की हिफाजत करें। देश की हिफाजत के लिए हमारे सैनिक दिन-रात पहाड़ की तरह देश की सुरक्षा में कंपकंपाती ठंड और झुलसाने वाली गर्मी में भी डटे रहते हैं। लेकिन यह देश के नागरिकों का दायित्व है कि वे देश प्रेम की खातिर अपने हर कर्तव्य को ईमानदारी और नैतिकता से निभाएं।

चिट्ठी 1

हमारे देश में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक समस्याओं और बुराइयों की मुख्य वजह हमारा स्वार्थ भी है। स्वार्थ के वशीभूत होकर हम एक तो बुरा देखकर भी धृतराष्ट्र बने रहते हैं। दूसरा, अपने स्वार्थ के लिए चापलूसी, निंदा, चुगली और गलत भाषा का उपयोग करने से गुरेज नहीं करते और तीसरा, किसी बुराई या गलत काम के बारे में सुनकर भी हम बहरे बने रहते हैं। जब हम अपने स्वार्थ को ध्यान में रखते हुए या फिर सरकार की गलत नीतियों के विरोध में देश को नुकसान पहुंचाते हैं तो इससे नुकसान हमारा ही होता है, न कि सरकारों का, क्योंकि इससे हमारे देश की छवि पूरी दुनिया में दागदार होती है। इससे अगर कोई भविष्य में विदेश जाकर पढ़ाई, नौकरी या काम करना चाहता है तो उसे शक की नजर से भी देखा जाता है। यह हमारी भावी पीढ़ी के लिए भी हानिकारक है। हमारा देश लगभग हर क्षेत्र में बहुत तरक्की कर रहा है, लेकिन हमारे दिल में देश प्रेम की भावना होनी चाहिए। भावी पीढ़ी को बचपन से ही देश प्रेम का सबक सिखाना चाहिए, ताकि बच्चे भी एक जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

■ राजेश कुमार चौहान, जालंधर

कचरा निस्तारण की गाइडलाइन नहीं

स्वच्छता अभियान पर सभी जोर दे रहे हैं। डस्टबिन गाड़ियों में भी रखी जाए, ऐसी लोगों की मांग हो रही है। मगर डस्टबिन का कूड़ा-कचरा कहां ठिकाने लगाया जाए, इसकी चर्चा कहीं कोई नहीं कर रहा है। शायद ही कोई नगर पालिका या नगर निगम हो, जो कूड़े को डंप करने या रिसाइक्लिंग करने का उपक्रम सही ढंग से संचालित कर रहा हो।

आज स्थिति यह है कि जगह-जगह बच्चों के इस्तेमाल किए हुए पैंपर्स, सेनेटरी पैड, ई-वेस्ट, बायोवेस्ट जहां-तहां बिखरे मिल जाएंगे। वजह यह कि डस्टबिन के बाद कूड़ा-कचरा का निस्तारण कहां किया जाए, यह कहीं नहीं लिखा है, न ही इसके लिए कोई सरकारी गाइडलाइन है। लोग कूड़ा खाली प्लॉटों में या कहीं खुले गड्ढों में या खाली सड़कों पर फेंक देते हैं। इस समस्या का समाधान तभी हो पाएगा, जब कूड़ा निकासी की सही व्यवस्था होगी। आज बायोवेस्ट के जगह-जगह ढेर लगे देखे जा सकते हैं। पॉलीथिन पर पाबंदी के बाद भी कोई असर नहीं दिखता है। ऑनलाइन सामान या खाद्य पदार्थ बेचने वाली कंपनियों का पैंकिंग मटेरियल कहां जा रहा है? कोई सरकारी गाइडलाइन नहीं है। जगह-जगह लगे कूड़े के ढेरों पर जब पानी बरसता है या उन्हें जलाया जाता है तो उससे निकलने वाली जहरीली गैसों से श्वास की बीमारियां होती हैं। यह स्थिति तब सुधरेगी, जब सही ढंग से कूड़े-कचरे का निस्तारण होगा और उसे डंप करने की, रिसाइक्लिंग करने की ठोस व्यवस्था होगी।

चिट्ठी 2

■ सुरेश सौरभ, लखीमपुर खीरी

सरकारी स्कूलों में सुधार जरूरी

उत्तराखंड में सरकारी स्कूलों को उन्नत करने का जितना अधिक प्रयास किया जा रहा है, उतना ही उनकी स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। पूरे प्रदेश में सरकारी स्कूलों की स्थिति यह है कि कहीं एक शिक्षक है, तो कहीं बिना शिक्षक के ही स्कूल चल रहे हैं। एक सर्वे के अनुसार कुमाऊं मंडल के ही 523 प्राइमरी स्कूल एकल शिक्षक के भरोसे हैं। ग्रामीण अंचलों के दूरस्थ क्षेत्रों में स्थित इन विद्यालयों का स्तर निजी अंग्रेजी माध्यम स्कूलों के बराबर करने के लिए सरकार ने एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया, लेकिन आज भी इन स्कूलों में छात्रों की संख्या नगण्य है। यह भी एक सच्चाई है कि नवोदय विद्यालयों से लेकर अटल उत्कृष्ट विद्यालयों में आज भी न तो विज्ञान के अच्छे अध्यापक हैं, न ही गणित के और न ही अंग्रेजी के। इन स्कूलों में पढ़ाने वाले शिक्षक भी अपने बच्चों को यहां न पढ़ाकर अंग्रेजी स्कूल ही भेजते हैं। पर्वतीय क्षेत्र के अनेक विद्यालय ऐसे भी हैं, जहां शिक्षकों का तबादला होने के बाद मात्र एक शिक्षक ही वहां पर पढ़ाने के लिए बचा है। ऐसी स्थिति में यदि वह बीमार पड़ जाता है तो स्कूल में ताला लग जाता है। इसके लिए आवश्यक है कि हर विद्यालय में न्यूनतम शिक्षकों की नियुक्ति हो तथा वे मन लगाकर बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाए। बच्चों को बेहतर शिक्षा प्राप्त होगी तो वे जिले एवं प्रदेश की मेरिट लिस्ट में स्थान बना पाएंगे, जिससे अन्य अविभावक भी प्रेरित होकर अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में पढ़ाने के लिए प्रेरित होंगे।

चिट्ठी 3

■ रवि शंकर शर्मा, हल्द्वानी

इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं

श्रीनगर गढ़वाल से लक्ष्मण पुंडीर, इटावा से गौरव सक्सेना, बरेली से दिलीप कुमार गुप्ता, मेरठ से डॉ. नरेन्द्र टोंक, फिरोजाबाद से शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, गाजियाबाद से ललित शंकर, फिरोजाबाद से नितिन रावत, मेरठ से अहमद खान, मेरठ से पुनीत कुमार, लखनऊ से रतन कुमार श्रीवास्तव 'रतन', गाजियाबाद से ललित शंकर, आगरा से संजय गुप्त, आगरा से डॉ. कुमकुम।

हमें लिखें
abhiyan@amarujala.com

कुछ अलग

जब घड़ी में नहीं बजते हों 12

सोलोथर्न शहर का 11 नंबर के साथ अनोखा संबंध शहर के प्रमुख पर्यटक आकर्षणों में से एक है। यह 11 की संख्या से भरा हुआ एक अद्भुत शहर है।

हमारे देश में 12 अंक को अशुभ माना जाता है। तभी तो कई लोग यह कहते नजर आते हैं कि आपके चेहरे पर 12 क्यों बजे हैं, लेकिन आपको जानकर हैरानी होगी कि दुनिया में एक ऐसी भी घड़ी है, जिसमें कभी 12 बजे बजते ही नहीं है।

स्विटजरलैंड के उत्तर-पश्चिम में बसा सोलोथर्न एक ऐसा ही शहर है, जो न सिर्फ अपनी सुंदरता, बल्कि 11 नंबर के प्रति अपने अनोखे आकर्षण के लिए भी जाना जाता है। इस शहर की हर चीज 11 की संख्या के इर्द-गिर्द घूमती हुई प्रतीत होती है। इस शहर के एक चौक पर 11 घंटे की डायल वाली अजीबोगरीब खगोलीय घड़ी है, जिसमें 12 नंबर गायब है। 11 घंटे की डायल वाली इस घड़ी में 12 नंबर गायब होने के कारण कोई भी अनजान राहगीर भ्रम में पड़ जाता है। वैसे यहां पर और भी कई घड़ियां हैं, जिसमें 12 नहीं बजते हैं।

यहां के लोगों को 11 नंबर से इतना लगाव है कि वे अपने 11वें जन्मदिन को खास तरह से सेलिब्रेट करते हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि इस शहर में चर्च और टावर की संख्या 11-11 ही है। इसके अलावा संग्रहालय, ऐतिहासिक झरने भी 11 नंबर के हैं। यहां के सेंट उर्सूस के मुख्य चर्च में भी 11 नंबर का महत्व आपको साफ दिख जाएगा। दरअसल, यह चर्च 11 साल में बनकर तैयार हुआ था। इसमें तीन सीढ़ियों का सेट है और हर सेट में 11 पंक्तियां हैं। इसके अलावा यहां 11 दरवाजे और 11 घंटियां भी हैं। 11 नंबर या जर्मन में जिसे 'एल्फ' कहा जाता है, उसे अपनाना लोगों की ओर से 'एल्फ' के प्रति एक श्रद्धांजलि थी।

■ ज्ञान मुकुंद, दिल्ली

कैमरे में इतिहास के क्षण

यह तस्वीर 9 दिसंबर, 1946 को आयोजित संविधान सभा की पहली बैठक की है। यह बैठक दिल्ली में संविधान कक्ष में हुई थी, जिसे अब पुराने संसद भवन के केंद्रीय कक्ष के रूप में जाना जाता है। संविधान सभा को संविधान का मसौदा तैयार करने में दो साल, ग्यारह महीने और अठारह दिन लगे थे।

■ रोहतक से प्रवेश निषाद

ग्रामोफोन

सलिल, तलत से गवाना चाहते थे 'सुहाना सफर और ये मौसम हसीं'

1958 में आई फिल्म 'मधुमती' के निर्माण में कई दिग्गज शामिल थे। इस फिल्म को बनाया था निर्देशक बिमल रॉय ने, कहानी लिखी थी उपन्यासकार राजिंदर सिंह बेदी और ऋत्विक घटक ने, पटकथा राजिंदर सिंह बेदी ने तैयार की थी, गीत लिखे थे गीतकार शैलेंद्र ने और संगीत से सजाया था बौद्धिक संगीतकार सलिल चौधरी ने।

नायक-नायिका के रूप में भी दिलीप कुमार और बैजयंती माला की मशहूर जोड़ी थी। इस फिल्म का गीत-संगीत इतना लोकप्रिय हुआ कि सलिल चौधरी को सर्वश्रेष्ठ संगीतकार का फिल्मफेयर पुरस्कार मिला। पक्षियों और नदियों के कलकल भरे स्वरों का अभूतपूर्व उपयोग करते हुए सलिल चौधरी ने 'सुहाना सफर और ये मौसम हसीं' की जो धुन बनाई, वो आज भी ताजगी से भर देती है। सलिल पहले यह गीत तलत महमूद से गवाना चाहते थे, लेकिन तलत को अपने स्टेज प्रोग्राम के लिए बाहर जाना पड़ा। तब उन्होंने इसे मुकेश से गवाया, जो सदाबहार गीत बन गया। परदे पर इस गीत को दिलीप कुमार ने गाया।

■ कल्पना सक्सेना, मंडी

सच बोलने की स्थिति और परिस्थिति

अगर पार्टी के दृष्टिकोण से देखा जाए तो चीन में अधिक असहमति है। चीनी सरकार के खिलाफ बोलने या लिखने पर नौकरी से हाथ धोने, गिरफ्तार होने, प्रताड़ना झेलने या मारे जाने तक का खतरा बना रहता है, फिर भी कुछ लोग सच बोलने का साहस दिखाते हैं।

जॉर्ज ऑरवेल के उपन्यास '1984' की प्रसिद्ध पंक्तियों में से एक है- "जो अतीत को नियंत्रित करता है, वह भविष्य को भी नियंत्रित कर सकता है। जो वर्तमान को नियंत्रित करता है, वह अतीत को भी नियंत्रित कर सकता है।" इस कथन को कहते हुए ऑरवेल के मन में स्टालिन का रूस था, लेकिन उनका यह कथन सभी अधिनायकवादी शासकों पर कमोबेश सच है, जहां सत्तारूढ़ दल और नेता इतिहास का अपना संस्करण जनता पर थोपना चाहते हैं। लेकिन अपेक्षाकृत खुले समाज में इतिहास का कोई भी एक संस्करण समग्र रूप से नागरिकों पर नहीं थोपा जा सकता। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में जब रिपब्लिकन सत्ता में होते हैं तो वे नस्ल संबंध कैसे थे या होने चाहिए, इस पर अपना दृष्टिकोण थोपने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन उनके इन विचारों का उन लोगों द्वारा अक्सर विरोध होता है, जो इस घटना को अलग तरीके से देखते हैं।

भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में भी अतीत पर राज्य प्रायोजित दृष्टिकोण गहन बहस के विषय हैं। उदाहरण के लिए, मोदी सरकार ने अपने सभी मौजूदा संसाधनों के साथ हिंदू-मुस्लिम संबंधों की एक खास तस्वीर पेश करने की कोशिश की है। इस कोशिश में देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के योगदान को कम करने की कोशिश भी शामिल है। फिर भी ऐसी वेबसाइट्स, प्रकाशन संस्थान, यूट्यूब चैनल और अखबार, जो बिना शासनादेश के चलते हैं और जहां लोग इन विषयों को अलग तरीके से समझते हैं, सार्वजनिक रूप से अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं। ऐसी स्वतंत्र आवाजों के दमन के लिए ही मोदी सरकार एक नया 'ब्रॉडकास्टिंग बिल' लाने की तैयारी में है।

वर्तमान समय में किसी भी संगठन ने इस विचार कि 'लोग कैसे सोचते हैं या क्या सोचते हैं' पर इतनी सख्ती से नियंत्रण करने की कोशिश नहीं की है, जितनी कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीसी) ने। अपने देश के अतीत, वर्तमान और भविष्य की प्रस्तुति में सीपीसी ने चार मुख्य प्रस्तावों की रूपरेखा के दायरे में काम किया है-

पहला, पार्टी और नेता हमेशा सही होते हैं।

दूसरा, पार्टी के कैडर, पदाधिकारी और महान नेता, चीन को उन्नति की राह पर ले जाने के साथ उसे मजबूत तथा समृद्ध बनाने के लिए हर मौसम में दिन-रात मेहनत करते हैं।

तीसरा, जो सार्वजनिक या निजी तौर पर पार्टी की नीतियों या उसकी प्रथाओं की आलोचना करते हैं, वे देश के दुश्मन हैं और विदेशी ताकतों के इशारों पर काम करते हैं।

चौथा, यदि पार्टी इस तरह की आलोचनाओं से सख्ती से नहीं निपटती है तो चीन 1949 के पहले वाले अंधकार युग में लौट जाएगा, जब इसे विभाजन, विवाद और गृह युद्ध एवं पश्चिमी शक्तियों ने पंगु बना दिया था।

अगर पार्टी के दृष्टिकोण से देखा जाए तो चीन में अधिक असहमति है। 1949 के बाद भी सरकार के खिलाफ बोलने या लिखने पर नौकरी से हाथ धोने, गिरफ्तार होने, प्रताड़ना झेलने या मारे जाने तक का खतरा बना रहता था। फिर भी जैसा कि एक हालिया पुस्तक दर्शाती है, कुछ लोग अब भी साथी नागरिकों को आधुनिक चीनी इतिहास और विशेष रूप से कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास की सच्चाई पेश करने के लिए इन जोखिमों को उठाने का साहस करते हैं।

हाल में आई किताब का नाम है- 'स्पार्क्स : चाइनाज अंडरग्राउंड हिस्टोरियन्स एंड देयर बैटल फॉर द फ्यूचर'। किताब के लेखक हैं इयान जॉनसन, जिन्होंने सरकार द्वारा निष्कासित किए जाने से पहले कई सालों तक चीन में

रामचंद्र गुहा
जाने-माने इतिहासकार

रिपोर्टिंग की है। अपनी किताब में जॉनसन पाठकों को चीन के परिदृश्य, शहरी और ग्रामीण सभ्यता-संस्कृति के साथ उसके समृद्ध कला-साहित्य और दर्शन के बारे में भी जानकारी देते हैं। जॉनसन 1949 से 1976 तक सत्ता में रहे माओत्से तुंग द्वारा अपने लोगों पर की जाने वाली निर्दयता के बारे में भी बेबाकी से लिखते हैं। माओ को दुश्मनों की जरूरत थी और वे उन्हें हर जगह मिल जाते थे, खेतों में, कारखानों में, शहर और देश में, यहां तक कि कम्युनिस्ट पार्टी के अंदर भी। लाखों मेहनतकश चीनी नागरिक, जिन्होंने कभी कोई अपराध नहीं किया, उन्हें भी माओ के गुंडों ने दुश्मन के रूप में नामित किया। अगर वे भाग्यशाली होते थे तो उन्हें सिर्फ अपने घरों से बेदखल किया जाता था या किसी छोटे-मोटे काम पर लगा दिया जाता था। ऐसा नहीं होने पर या तो जेल में डाल दिया जाता था या मार दिया जाता था।

माओ सनक और जानलेवा इरादों का एक अनोखा मिश्रण था। 1956 में उसने 'सौ फूल खिलें' कहकर लोगों से मन की बात कहने का आह्वान किया। जब लोगों ने उनकी बात मान ली तो उसने अपना आह्वान वापस ले लिया और दक्षिण पंथ विरोध अभियान शुरू कर दिया, जिसमें लेखकों, शिक्षकों, छात्रों, वकीलों, प्रबंधकों और वैज्ञानिकों जैसे दूर की सोच रखने वालों का सफाया हो गया। जॉनसन लिखते हैं, इस प्रक्रिया में विश्वविद्यालय, उच्च विद्यालय, अनुसंधान संस्थान और सरकारी कार्यालय नष्ट हो गए। लाखों की संख्या में लोगों को मजदूरों के कैंप में भेज दिया गया। वे खुद को बचाने के लिए पार्टी के आदेशों का हूबहू पालन करने की कोशिश कर रहे थे। जॉनसन के अनुसार, भूमिगत हुए लेखकों में से कई उनके बच्चे या भाई-बहन थे, जिनको राज्य द्वारा या तो जेल में डाल दिया गया था या मार दिया गया था। ऐसे लोगों की पीड़ा चीन में कम्युनिस्ट शासन के काले पक्ष के बारे में जनता को सचेत करने के लिए प्रेरित करती है। जॉनसन जिन असंतुष्टों के बारे में लिखते हैं, उनमें से कई पहले खुले विचारों वाले थे। इंटरनेट के विकास की वजह से उन लोगों को लेखन और फिल्मों को प्रचारित करने का अवसर मिला। उनका समय बौद्धिक स्वतंत्रता का समय था।

2012 में शी जिनपिंग के सत्ता में आने के बाद इन स्वतंत्र इतिहासकारों का काम और कठिन हो गया। अपने कार्यकाल की शुरुआत में शी ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास को बेहतरीन तरीके से पेश करने की बात कही। राज्य द्वारा नियुक्त इतिहासकारों के समूह को स्वतंत्रता का जश्न मनाने का आदेश दिया गया। उन्हें इस बात का भी ध्यान रखने के लिए कहा गया कि युवा और बच्चे पार्टी और उनके नेताओं के बलिदान से अच्छी तरह वाकिफ हों। इसके अलावा सरकारी पत्रकारों से भी पार्टी के इतिहास को बिगाड़ने और बदनाम करने वाली प्रवृत्ति का विरोध करने को कहा गया। माओ के समय की तरह शी जिनपिंग के समय में भी कुछ लोगों ने विरोध में आवाज उठाना जारी रखा। जैसा कि जॉनसन लिखते हैं कि "सच्चाई यह है कि स्वतंत्र विचार चीन में रहते हैं और इसे कुचला नहीं गया है।" कुछ लेखक, पत्रकार, कलाकार और फिल्म निर्माता यह दिखाना जारी रखेंगे कि "पार्टी हमेशा नहीं जीतती।" इस पुस्तक में लोगों के बारे में पढ़ते हुए मैं उनके नैतिक और शारीरिक साहस से प्रभावित हुआ, लेकिन साथ ही उनकी बौद्धिक स्पष्टता से भी। एक महिला लेखिका जियांग जू कम्युनिस्ट चीन में इतिहास के बारे में यह कहती हैं कि "हमें इतिहास को फिर से लिखना चाहिए। लेकिन इतिहास घटित हो चुका है। अगर यह एक उपन्यास है तो आप इसे फिर से लिख सकते हैं। लेकिन अगर यह इतिहास है तो आप इसे कैसे फिर से लिख सकते हैं? विवेक वाला कोई भी व्यक्ति फिर से लिखे गए इतिहास को अस्वीकार कर देगा।" किताब में एक अन्य पात्र झांग शिहे नामक एक पुरुष पत्रकार कहता है, "मैं जैसा लिखता हूं, वैसा ही करता हूं, क्योंकि मैं उन लोगों में से एक हूं, जो यह सब देखकर क्रोधित हो जाता है और मुझे बोलना पड़ता है।" किताब में ही तीसरे पात्र के रूप में शिक्षाविद चेन होंगू विडंबनापूर्ण ढंग से पूछते हुए दिखते हैं, "क्या हमारे युग की यही राजनीति है, जहां पागल लोग अंधे को रास्ता दिखाते हैं?" और अंत में फिर से जियांग जू है, जो एक ऐसे मित्र को जवाब दे रही है, जिसने उससे कहा था कि उसका काम व्यर्थ और अप्रासंगिक है और कम्युनिस्ट चीन जैसे कड़े नियंत्रण वाले तानाशाही में इसका कोई प्रभाव नहीं हो सकता- "लेकिन मैं असहमत हूं। अगर आप कोशिश करते हैं तो यह मायने रखता है। मैं एक असामान्य समाज में एक सामान्य व्यक्ति बनना चाहती हूं। मैं सच्ची बातें कहने और दिल की बात व्यक्त करने में सक्षम होना चाहती हूं।"

देहदान को सामाजिक आंदोलन की तरह लें

मार्च 2019 में मंगोलिया में स्वास्थ्य कर्मियों को अंगदान और देहदान के विषय में जागरूक करने के लिए एक अभियान चलाया गया। अभियान में 2000 स्वास्थ्य कर्मियों और मेडिकल छात्रों को इसकी जानकारी देने के लिए 25 मेडिकल कॉलेज तथा अस्पतालों में अंगदान एवं देहदान पर व्याख्यान और प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए गए। नतीजा यह रहा कि स्वास्थ्य कर्मियों के ज्ञान में वृद्धि हुई और मंगोलियन समाज का अंगदान के प्रति दृष्टिकोण साफ हुआ।

13 अगस्त को विश्व अंगदान दिवस है और आज अंगदान समाज की एक बड़ी जरूरत है। मानव शरीर में हृदय, यकृत, गुर्दे और फेफड़े ऐसे अंग हैं, जिनको दान किया जा सकता है। इसकी जरूरत इसलिए है कि भारत में मोटापा और मधुमेह आम हैं। मधुमेह के कारण किडनी के खराब हो जाने का संकट बहुत बड़ा है। ऐसे में किडनी के प्रत्यारोपण की जरूरत होती है। मोटापा व्यक्ति के जीवन पर हानिकारक प्रभाव डाल सकता है। फैटी लिवर के कारण कई तरह की बीमारियां हो जाती हैं। यदि अनुपचारित छोड़ दिया जाता है, तो मृत्यु हो जाती है। ऐसे में यकृत प्रत्यारोपण की जरूरत होती है। मेडिकल छात्रों के अध्ययन के लिए पूरी देह दान की जा सकती है।

श्वेतवर्ण केतु

खुला आकाश

विश्व अंगदान दिवस पर खास

एक आंकड़े के अनुसार, भारत में अंगों के प्रत्यारोपण की प्रतीक्षा सूची बहुत लंबी है।

लेकिन अंग प्रत्यारोपण के मामले में भारतीय बहुत पीछे हैं। अक्सर सामाजिक परिस्थिति और लोगों की मानसिकता अंग या देहदान करने से रोकती है। यह हम सबके लिए एक सामाजिक आंदोलन की तरह है, जिसमें दधीचि देह दान समिति 'निरामय भारत' बनाने का संकल्प लेकर जुटी हुई है। इस आंदोलन में सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षक और स्वास्थ्य कर्मी काफी हद तक मदद कर सकते हैं। अस्पताल में डॉक्टर, नर्स और स्वास्थ्य कर्मियों के संपर्क में ढेर सारे रोगी आते हैं। वे मरीजों या उनके तीमारदारों को अंगदान प्रक्रिया के बारे में बता सकते हैं। लेकिन अक्सर अस्पतालों में न तो सीनियर स्टाफ के पास अंगदान प्रक्रिया की पूरी जानकारी होती है और न ही डॉक्टरों के पास। इसलिए जरूरी है कि हर अस्पताल के स्वास्थ्य कर्मियों को नेत्र, अंग और देहदान से जुड़ी सभी जानकारियां देने के लिए सतत प्रयास किए जाएं। डॉक्टरों को अंगदान से जुड़ी कानूनी प्रक्रियाओं के बारे में बताया जाए, ताकि लोगों को उनकी शंकाओं और प्रश्नों के उत्तर मिल सकें।

महर्षि दधीचि पहले अंगदाता हैं, जिन्होंने सृष्टि को बचाने के लिए अपना अंग दान किया था। हमें भी यह समझना होगा कि जीवन बचाने के लिए अंग प्रत्यारोपण ही एकमात्र अंतिम विकल्प है। एक आंकड़े के अनुसार, भारत में अंगों के प्रत्यारोपण की प्रतीक्षा सूची एक लाख से ज्यादा है। अंग न मिल पाने से प्रतिदिन औसतन 17 लोगों की मौत हो जाती है। एक रोगी को औसतन 3 वर्ष प्रतीक्षा करनी पड़ती है। इसलिए अंगदान के महत्व को समाज के हर व्यक्ति को समझाना जरूरी है। तभी हम एक स्वस्थ देश के निर्माण की ओर बढ़ सकेंगे।

उस्तरा

ललित शौर्य

सोने की ख्वाहिश का भूत

बजट में सोना सस्ता होने की आहट हुई है,
सच कहूं, तब से मुझे बहुत घबराहट हुई है।
पत्नी जी तो मुझे खूब मक्खन लगा रही हैं,
चार की जगह अब छह रोटियां खिला रही हैं।
वह हरपल मुझे पटाने और मनाने लगी है,
रात को खाने के बाद मेरे पैर भी दबाने लगी है।
बजट के बाद जिसका डर था, वही होने जा रहा है,
उसकी 'सोने' की ख्वाहिश का भूत बाहर आ रहा है।

चूरण

चिंटू : तुझे पता है, मेरे दादा जी शेर से लड़ गए थे।
सिंटू : क्या सच में?
चिंटू : हां, सच में।
सिंटू : फिर क्या हुआ?
चिंटू : फिर क्या, शेर उन्हें खा गया।

एक आश्रम में सात साधु सात चटाई पर बैठे थे। एक आदमी आया और सबसे बड़े साधु से पूछा : बाबा, बीवी कंट्रोल नहीं होती क्या करूं ?
साधु (छोटे साधु से) : एक चटाई और लगा भाई के लिए।

बंटी : ओए तूने अपनी सगाई क्यों तोड़ दी?
शंटी : अरे यार, उसका कोई बॉयफ्रेंड नहीं था।
बंटी : तो ?
शंटी : जो आज तक किसी की ना हो सकी, वह मेरी क्या होगी!

संता : मुझे तुम्हें एक बात कहनी है।
लड़की : बोलो बाबा, शरमा क्यों रहे हो?
संता : मेरे साथ चाय पर चलोगी?
लड़की : अरे! नहीं बाबा, चाय गरम होती है, मेरे हाथ-पैर जल गए तो...

जब महादेश का अलमबरदार एक देश की यात्रा में रेशमी गांठें कसता जाता है, पर अगले ही दिन उस देश के दुश्मन देश की यात्रा पर निकल जाता है, तब लगता है कि केमिकल मेहंदी ने रंग छोड़ दिया है दोस्ती का।

जब केमिकल मेहंदी रंग छोड़ दे...

आदमी कितना छुपाता है और कितना दिखाता है। भीतर के पहाड़ को भी आइसबर्ग की तरह मुंडी-कट कर देता है। यों तो पति-पत्नी के बीच भी निभाव के लिए प्रशंसा की कूटनीति कारगर होती है। परिवार और मोहल्ला नीति के भी अपने दर्शन-प्रदर्शन के चेहरे। कभी दिखाऊ, कभी छुपाऊ, कभी दिल-जलाऊ भंगिमाओं के अंदाज। पर लोग समझते हैं। सी.सी.टी.वी. कैमरे में भी वे अटकते नहीं, मुद्राओं में छुपे इरादों को अपना पाठ-कुपाठ देते रहते हैं।

बी.एल. आच्छा

पर विदेश नीति तो विदेश नीति है। चेहरों और बॉडी लैंग्वेज को अनुमान में ढालना मुश्किल होता है। गिरगिटिया देशी राजनीति की मुस्कान पर केवल देशी की बपौती नहीं है। भीतर से मिसाइलें फूटती आमने-सामने। मगर चेहरों पर आइरन ड्रोम जैसे कवच बना लेते हैं, तो सारा युद्ध ही बांकपन में खोया रहता है। रसायन उबाल खाकर भी एल.ओ.सी. पर चुपचाप नजर आते हैं। कभी हाथ मिलाते हैं, तो भीतर की मांसपेशियां तनी होकर भी ऊपर से स्पंज सी मुलायम। कभी आंखों में तकरार छुपी रहती है, पर ऊपर से खोखलेपन में रोमांटिक ठहाके गहरे गूंजते रहते हैं। देर तक हिलते हुए हाथ रेडकार्पेट पर प्रफुल्ल नजर आते हैं, पर भीतर से इकरार खोखला बना रहता है। यों झूले पर साथ-साथ झूलते हुए भी एक-दूजे को अपने-अपने गणित में झुलाते रहते हैं। कभी देर तक हस्तमिलाप सौदाई फेरों का गठबंधन बन जाता है। आसान नहीं है देशों के आपसी संबंधों को चेहरों से ताड़ लेना। कई बार रिश्तों के रीमिक्स नए गानों में फूटने लगते हैं। तब गुटनिरपेक्ष चेहरों को भी चेहरा निरपेक्ष मुस्कान में सजना पड़ जाता है। शोहबत और तोहमत के रीमिक्स अपना खेल खेलते रहते हैं।

कैमरे इन दिनों अखबारी संपादकीयों से भी ज्यादा अर्थ फेंकने लगे हैं। जब कभी दो देशों के प्रमुख मिलते हैं, तो उनके बीच की दूरी के सेंटीमीटर तक कुछ कह जाते हैं। पर जब कभी हाथ हिलाऊ झटके मुट्ठी दोस्ती से आगे कंधों तक जाते हैं, तो लगता है कि यह रोमांस किसी संधि या व्यापारिक सौदे तक जाएगा। व्यापार के बंद दरवाजे रेड कार्पेट बिछाने लगते हैं। इन गठबंधनों में, इन हसरती आंखों में, इस पीठ सहलाऊ छुअन दृश्यों में, भीतर के दांव कम नहीं होते। यों पहले से ही तैयार प्रस्ताव इन आंखों में तैरते हैं, पर लाभ-हानि के दांव भी पसरे रहते हैं। मित्रता के अध्याय अलिखित नहीं होते। जबान और आंखों में बाजार और व्यापार अपने खेल

बात-बेबात

रचते रहते हैं। ऊपर से लगता है कि दो देशों के बीच हीर-रांझा सरीखा प्रेम, मगर भीतर में व्यापार का गणितीय दहेज चक्रवृद्धि गिनता रहता है। कभी आकाशी उड़नचील का सौदा, कभी खेती के विदेशी बीज का। कभी गुटीय गठबंधन का। अगरचे ये दांव न लगें तो मतलब ही क्या? यह विदेश यात्रा कश्मीर का रोमांटिक टूरिज्म थोड़े ही है। यहां तो बॉडी का हर सिरा अपनी भाषा में भीतर ही भीतर कुरकुराता रहता है, छुपाते-दिखाते अंदाज में।

भीतरी पेंच भी चेहरे पर चुप नहीं रहते। उनका एलजेब्रा तक समझ में आता है। जब महादेश का अलमबरदार एक देश की यात्रा में रेशमी गांठें कसता जाता है, पर अगले ही दिन उस देश के दुश्मन देश की यात्रा पर निकल जाता है। तब लगता है कि केमिकल मेहंदी ने रंग छोड़ दिया है दोस्ती का। पर दौर बदले हैं। बंदर और बिल्लियों के किस्से में नए मोड़ आ गए हैं। अब बिल्लियां एक बंदर तक अटकी नहीं रहतीं। उसे ठंडा करने के लिए किसी दूसरे महादेश की यात्रा पर निकल जाती हैं। बरसों तक ठगा सा रह जाता है महादेश। तब होती है लॉलीपॉप उपचार से साधने की कोशिश। पर इसमें भी महादेश का अर्थमेटिक चुपचाप नहीं रहता। पता नहीं लगता है कि विक्रम बेताल को ढो रहा है या बेताल विक्रम को।

चेहरों की गुटनिरपेक्षता भी दांव खेलने से बाज नहीं आती। पिछलग्गूपन को धता बताते हुए भी वे विरोधी गुट प्रमुखों की पीठ पर हाथ फेर जाते हैं। कितना ही संकट हो पर धता बताते हुए तेल का खेल, खेल ही जाते हैं। ट्रंप कार्ड हो या पुतिन कार्ड; इससे फर्क नहीं पड़ता। चेहरे पर सलवटें तो दुश्मन देश को कुनमुनाती रहती हैं। बिहारी ने ठीक ही कहा है- आंखें किसी की उलझती हैं, पर दुश्मन के दिल में गांठें पड़ जाती हैं। दुनिया तो दो देशों के हिलते हाथों के दबाऊ गठबंधन के अर्थ लगाती रहती है। गले लिपटने के अंदाज पर कयास लगाती रहती है। पर जलकुक्कड़ सिटपिटा कर रह जाते हैं। लगता है कि विदेशी रिश्तों की कैमरा भाषा में केमिस्ट्री के एक्शन रिएक्शन के चैप्टर भी पाठ्यक्रम का विषय बन ही जाएगा।

नागरिक अभिनंदन

आज हर अकुआ-भकुआ समझने लगता है कि समाज और सरकार को मेरी उपलब्धियों की ओर ध्यान देना चाहिए।

पंडित बिहारीलाल जी ने बड़ी गंभीर मुद्रा बनाते हुए मुझसे पूछा, "तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि आजकल लोगों का रुझान अपना सार्वजनिक नागरिक अभिनंदन करवाने की तरफ काफी बढ़ रहा है?"

महीप सिंह

मैं उनकी तरफ टकटकी लगाकर देखने लगा। वे क्या कहना चाहते हैं, मैं समझ नहीं पा रहा था।

उनके माथे पर कुछ बल पड़ गए, "मैं जब भी कोई नई बात तुम्हारे सामने रखता हूं, तुम उजबक की तरह मुझे देखने लगते हो। पहली बार में तो तुम्हारी समझ में कुछ भी नहीं आता।"

मैंने सिर हिलाते हुए उनकी बात का समर्थन किया, "पंडित जी आप बिल्कुल ठीक कहते हैं। बचपन से ही लोग मेरे आई क्यू पर शक करते रहे हैं। पहली बार में बात मेरे भेजे में नहीं बैठती। जब कुछ समझ में आता है, तो निर्णय लेने में मुझे बहुत समय लगता है। यही सोचता रहता हूं कि इस बात के कितने पहलू हो सकते हैं। यही सोचते-सोचते सामने से बात निकल जाती है। खैर...।" अपने-आपको व्यवस्थित करते हुए मैंने पूछा, "आप लोगों में बढ़ते हुए किसी रुझान की बात कर रहे थे।"

अभिनंदन समारोह का हाल यह हो गया कि मंच पर बैठे लोगों की गिनती, सामने कुर्सियों पर बैठे तालियां बजाने वाले लोगों से ज्यादा हो गई।

इधर-उधर से

वे बोले, "क्या तुम यह नहीं देख रहे हो कि आजकल शहर में स्वागत समारोहों की बाढ़ आई हुई है। हर अकुआ-भकुआ, मेरा मतलब है 'टॉम डिक हैरी' जिसने अपनी सारी उमर में मुश्किल से दो-चार तीले तोड़े होते हैं, वह भी यह समझने लगता है कि समाज और सरकार को मेरी उपलब्धियों की ओर ध्यान देना चाहिए। या तो मुझ पर एक मोटा-सा अभिनंदन ग्रंथ निकलना चाहिए या मेरा सार्वजनिक अभिनंदन होना चाहिए।"

मैं हां-में-हां मिलाते हुए बोला, हां पंडित जी, आप कहते तो बिल्कुल ठीक हैं। मेरे एक मित्र हैं। साहित्य में उन्होंने कुछ उठापटक की है। यह सब करते-करते वे साठ बरस के हो गए। ('एक गुंडे का समय-बोध' से)

आड़े-तिरछे

रेखांकन : दुर्गादत्त पांडेय

Job Alert

रेल मंत्रालय में रोजगार के अवसर

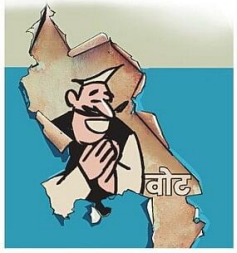

डायटीशियन, नर्सिंग सुपरिंटेंडेंट व अन्य पदों पर मौके

1376 पद

आवेदन की अंतिम तिथि : 16 सितंबर, 2024
वेतनमान : रुपये 19,000 से लेकर रुपये 44,900 तक
यहां आवेदन करें : https://indianrailways.gov.in

एमपी राज्य सहकारी बैंक में मौके ■ 95 पद

मैनेजर, नोडल ऑफिसर व अन्य पदों पर आवेदन आमंत्रित
आवेदन की अंतिम तिथि
05 सितंबर, 2024
योग्यताएं
ग्रेजुएशन, पोस्ट-ग्रेजुएशन एवं अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
https://apexbank.in

MPPGCL, बिरसिंहपुर ■ 95 पद

आईटीआई अप्रेंटिस के लिए योग्य अभ्यर्थी करें अप्लाई
आवेदन की अंतिम तिथि
21 अगस्त, 2024
योग्यताएं
आईटीआई एवं अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
mppgcl.mp.gov.in

हरियाणा स्वास्थ्य विभाग ■ 777 पद

मेडिकल ऑफिसर (ग्रुप-ए) के पदों पर निकली भर्ती
आवेदन की अंतिम तिथि : 28 अगस्त, 2024
योग्यताएं : मेडिकल और सर्जरी में ग्रेजुएट व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें : http://www.haryanahealth.gov.in

RPSC में अभ्यर्थियों के लिए मौके ■ 56 पद

जियोलॉजिस्ट, असिस्टेंट माइनिंग इंजीनियर के पद खाली
आवेदन की अंतिम तिथि
20 अगस्त, 2024
योग्यताएं
स्नातक/स्नातकोत्तर/डिप्लोमा व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
rpsc.rajasthan.gov.in

डिस्ट्रिक्ट कोर्ट, पलवल ■ 17 पद

चपरासी के पदों पर योग्य उम्मीदवार करें आवेदन
आवेदन की अंतिम तिथि
22 अगस्त, 2024
आयु- सीमा
न्यूनतम 18 वर्ष व अधिकतम 42 वर्ष निर्धारित
यहां आवेदन करें
palwal.dcourts.gov.in

यहां भी रोजगार की संभावनाएं ...

- भांडागारण विकास और विनियामक प्राधिकरण, नई दिल्ली : उप-निदेशक व निजी सहायक के पद खाली।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 02 सितंबर, 2024
  ■www.wdra.gov.in
- भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण : प्रबंधक का पद रिक्त।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 23 अगस्त, 2024
  ■www.nhai.gov.in

अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों के लिए हमें udaan@amarujala.com पर ई-मेल करें।

Real-time job alerts
amarujala.com/jobs

SCHOLARSHIP ALERT

टाटा एआईजी-अवंती फेलो स्कॉलरशिप - 2024

टाटा एआईजी जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड और अवंती फेलो की ओर से टाटा एआईजी-अवंती फेलो स्कॉलरशिप प्रोग्राम का आयोजन किया जा रहा है। यह स्कॉलरशिप इंजीनियरिंग और चिकित्सा के क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले आर्थिक और सामाजिक रूप से कमजोर और वंचित पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए प्रारंभ की गई है। प्रोग्राम के तहत छात्रों को वित्तीय सहायता, शैक्षणिक और कॅरिअर मार्गदर्शन सहित व्यापक सहायता प्रदान की जाएगी। प्रोग्राम का उद्देश्य छात्रों में उनके चुने हुए क्षेत्रों में सफल होने और अपने समुदायों में बदलाव लाने के लिए कौशल, ज्ञान और आत्मविश्वास को विकसित करना है। इस स्कॉलरशिप प्रोग्राम के माध्यम से छात्रों को उनकी शिक्षा के लिए पूर्ण वित्तीय सहायता, जिसमें ट्यूशन फीस, रहने का खर्च, अध्ययन सामग्री व लैपटॉप आदि शामिल हैं। इच्छुक उम्मीदवार अपनी अर्हता की जांच करते हुए ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

- ■ अंतिम तिथि : 03 सितंबर, 2024
- ■ आवेदन का लिंक : tataaigcsr-avantifellows.org

आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों के लिए वित्तीय सहायता

जेके लक्ष्मी विद्या रिन्यूवल स्कॉलरशिप 2024-25 के लिए कक्षा 6 के छात्रों से आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं। इसका उद्देश्य गरीब आर्थिक पृष्ठभूमि वाले छात्रों को उनकी शिक्षा जारी रखने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है। इस स्कॉलरशिप प्रोग्राम में आवेदन के लिए छात्रों को कक्षा पांच में न्यूनतम 50 फीसदी अंक प्राप्त करना अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त छात्रों को कक्षा छह में पूर्णकालिक रूप से अध्ययनरत होना चाहिए। आवेदक की पारिवारिक वार्षिक आय 5,00,000 रुपये से कम होनी चाहिए। इस स्कॉलरशिप प्रोग्राम के तहत छात्रों को 5,000 रुपये की स्कॉलरशिप प्रदान की जाएगी। स्कॉलरशिप के लिए आवेदन ऑनलाइन माध्यम से स्वीकार किए जाएंगे।

- ■ अंतिम तिथि : 31 अगस्त, 2024
- ■ आवेदन का लिंक : vidyasaarathi.co.in

छात्राओं को मिलेगी एक लाख रुपये तक की स्कॉलरशिप

इंफोसिस फाउंडेशन की ओर से स्नातक प्रथम वर्ष में पढ़ने वाली छात्राओं को वित्तीय सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से इंफोसिस फाउंडेशन स्टेम स्टार्स स्कॉलरशिप प्रोग्राम 2024-25 की शुरुआत की गई है। स्कॉलरशिप प्रोग्राम में आवेदन के लिए इंजीनियरिंग, चिकित्सा (एमबीबीएस) व अन्य संबंधित क्षेत्रों में चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में पंजीकृत छात्राएं आवेदन कर सकती हैं। आवेदकों की पारिवारिक वार्षिक आय सभी स्रोतों को मिलाकर 8,00,000 रुपये से कम होनी चाहिए। आवेदकों का चयन शैक्षणिक योग्यता, वित्तीय पृष्ठभूमि, दस्तावेज सत्यापन और टेलिफोनिक इंटरव्यू के आधार पर किया जाएगा। स्कॉलरशिप प्रोग्राम के अंतर्गत चयनित छात्राओं को प्रतिवर्ष 1,00,000 रुपये तक की स्कॉलरशिप प्रदान की जाएगी, जिसमें ट्यूशन फीस, रहने और अध्ययन सामग्री का खर्च आदि शामिल हैं। आवेदकों के पास 12वीं के प्रमाण-पत्र, जेईई/सीईटी/नीट स्कोरकार्ड, आय प्रमाण-पत्र व अन्य निर्धारित दस्तावेज होने चाहिए। इंफोसिस फाउंडेशन स्टेम स्टार्स स्कॉलरशिप प्रोग्राम के तहत मिलने वाली इस स्कॉलरशिप के लिए आवेदन ऑनलाइन माध्यम में स्वीकार किए जाएंगे।

- ■ आवेदन की अंतिम तिथि : 15 सितंबर, 2024
- ■ आवेदन लिंक : https://tinyurl.com/drja67pc

आज का दिन

11 अगस्त, 1999

सहस्राब्दी का अंतिम पूर्ण सूर्य ग्रहण यूरोप, एशिया, अफ्रीका और उत्तरी अमेरिका के कुछ हिस्सों में दिखाई दिया था। इस सूर्य ग्रहण को इतिहास में सबसे ज्यादा देखे जाने वाले ग्रहणों में से एक माना जाता है।

- 1919 : जर्मनी में वाइमर संविधान अपनाया गया था।
- 1960 : चाड को फ्रांस से आजादी मिली थी।
- 1962 : सोवियत अंतरिक्ष एजेंसी ने अंतरिक्ष यान 'वोस्तोक 3' लॉन्च किया था।
- 2020 : उर्दू के मशहूर शायर और गीतकार राहत इंदौरी का निधन हुआ था।

व्रत त्योहार

आज : श्रावण शुक्ल पक्ष सप्तमी।
कल : मेला नयना देवी (हिमाचल), वर्षा ऋतु, सूर्य दक्षिणायने, उत्तर गोले। राहुकाल : 07.30 से 09.00 तक।

कल का पंचांग

विक्रमी संवत 2081, 21 श्रावण मास शक 1946, श्रावण मास 28 प्रविष्टे, 07 सफर हिजरी 1446, श्रावण शुक्ल पक्ष सप्तमी 07.55 तक उपरांत अष्टमी, स्वाती नक्षत्र 08.32 तक उपरांत विशाखा नक्षत्र, शुक्ल योग 16.24 तक उपरांत ब्रह्म योग, वणिज करण 07.55 तक उपरांत विष्टि (भद्रा) करण, चंद्रमा वृश्चिक राशि में 28.10 बजे।

सूर्योदय : 05.52
सूर्यास्त : 18.59
(भारतीय मानक समयानुसार)

amarujala.com/astrology

राशिफल

■ पं. विनोद त्यागी

मेष : पूर्व नियोजित कार्य में व्यस्त रहेंगे। नौकरी प्राप्ति का अवसर मिलेगा। व्यवसाय में उत्तम लाभ होगा।

वृष : कार्य में सफलता मिलेगी। अटका धन मिलेगा। अभिन्न मित्र से भेंट होगी। व्यावसायिक लाभ बढ़ेगा।

मिथुन : शुभचिंतकों से निराशा होगी। सामाजिक कार्य में रुचि रहेगी। व्यवसाय में लाभ होगा। यात्रा संभव है।

कर्क : जरूरी कार्य में व्यस्त रहेंगे। सहोदरों से निराशा होगी। व्यवसाय में लाभ कम होगा। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा।

सिंह : राजनीतिक क्षेत्र में सम्मान बढ़ेगा। संपत्ति में वृद्धि होगी। व्यावसायिक लाभ बढ़ेगा। यात्रा से कार्य बनेगा।

कन्या : कटुवादिता से हानि होगी। अजनबी से सतर्कता बरतें। व्यवसाय में लाभ होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

तुला : इच्छा पूर्ति का अवसर मिलेगा। नए कार्य की योजना बन सकती है। व्यवसाय में लाभ होगा। मन प्रसन्न रहेगा।

वृश्चिक : आरोग्य सुख में कमी रहेगी। आर्थिक चिंतन करेंगे। विरोधी से सचेत रहें। व्यवसाय में निराशा होगी।

धनु : अटके कार्य में सफलता मिलेगी। लोकप्रियता में वृद्धि होगी। व्यवसाय में लाभ होगा। मेहमान आगमन से हर्ष होगा।

मकर : आत्मबल बनाए रखें। नए कार्य का प्रस्ताव आएगा। सुख साधनों पर व्यय होगा। व्यवसाय में लाभ होगा।

कुंभ : इस समय संवेदनशील रहेंगे। संतान पक्ष से चिंतित रहेंगे। व्यवसाय में लाभ होगा। देव गुरु में आस्था रहेगी।

मीन : आर्थिक क्षेत्र में सावधानी रखें। व्यवसाय में जोखिम-जमानत से बचें। वाहन नियंत्रित चलाएं।

जन्मदिन

सुनील शेट्टी, अभिनेता

आज जन्मे जातक विश्वासपात्र, व्यवहार कुशल और कूटनीतिज्ञ होते हैं। लक्ष्य प्राप्ति 25 या 29वें वर्ष में होती है। इस वर्ष अधिकांश मनोइच्छाओं की पूर्ति होगी। भौतिक सुख-सुविधा के साधनों में वृद्धि होगी। आर्थिक क्षेत्र में सुधार आएगा। रोजगारपरक परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

सुडोकू

		9				5		7
8		7	1					
1					3	9		4
	2			4				9
		5				6		
7				5			4	
5		2	8					3
					2	7		5
9		3				8		

सुडोकू 81 वर्गों का ग्रिड है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे हैं और खाली वर्गों में 1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्ग वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

उत्तर

2	3	9	4	8	6	5	1	7
8	4	7	1	9	5	2	3	6
1	5	6	7	2	3	9	8	4
3	2	8	6	4	7	1	5	9
4	9	5	2	3	1	6	7	8
7	6	1	9	5	8	3	4	2
5	1	2	8	7	9	4	6	3
6	8	4	3	1	2	7	9	5
9	7	3	5	6	4	8	2	1

डेली हेल्थ कैप्सूल

दिल को स्वस्थ रखती है ग्वार फली

ग्वार की फली में फाइबर, पोटैशियम, फोलेट पाए जाते हैं, जो हृदय संबंधी समस्याओं से बचने में मदद करते हैं।

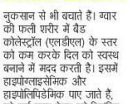

ग्वार की फली स्वादिष्ट होने के साथ-साथ काफी पौष्टिक भी होती है। इन फलियों में ग्लाइकोन्यूट्रिएंट्स होते हैं, जो शरीर में ब्लड शुगर लेवल को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। इसमें कैल्शियम और फॉस्फोरस अधिक मात्रा में पाए जाते हैं, जो हड्डियों को मजबूत बनाने में मदद करते हैं और उन्हें

नुकसान से भी बचाते हैं। ग्वार की फली शरीर में बैड कोलेस्ट्रॉल (एलडीएल) के स्तर को कम करके दिल को स्वस्थ बनाने में मदद करती है। इसमें हाइपोग्लाइसेमिक और हाइपोलिपिडेमिक पाए जाते हैं, जो हाई ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखते है। मधुमेह और हृदय पीड़ितों के लिए हाई ब्लड प्रेशर का खतरा अधिक रहता है। ऐसे में ग्वार फली का सेवन फायदेमंद साबित हो सकता है। इसमें मौजूद आयरन और कैल्शियम गर्भवती महिलाओं में इन खनिजों की कमी को पूरा करते हैं। यह फली फोलिक एसिड से भरपूर होती है, जो भ्रूण को कई विकारों से बचा सकती है। ग्वार में मौजूद आयरन हीमोग्लोबिन उत्पादन को बढ़ाती है, जो शरीर में खून की कमी को पूरा करता है। इसके अलावा इसमें फाइटोकेमिकल्स होते हैं, जो ब्लड में ऑक्सीजन की क्षमता को बढ़ाते हैं, जिससे ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ

जिन लोगों को त्वचा संबंधी समस्याएं होती हैं, उन्हें ग्वार की फली का सेवन करने से बचना चाहिए। इसके अलावा लूज मोशन या उल्टियां हो रही हैं तो भी ग्वार की फली नहीं खानी चाहिए।

-डॉ. नवीन चंद्र जोशी
वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक

एक्स से
तिरंगा हमारे गौरव, गरिमा, राष्ट्रीय एकता, संप्रभुता और अखंडता का प्रतीक है।... अपने ज्ञात/अज्ञात राष्ट्रनायकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा' को अपने घर पर ससम्मान फहराएं- योगी आदित्यनाथ/ मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

इस 15 अगस्त को जो सोचना है

हमें आशंकाओं के सौदागरों से भी सचेष्ट रहना होगा। बंगाल को भुखमरी की मृत्यु-शय्या पर धकेलने वाले चर्चिल और पश्चिम के तमाम स्वनामधन्य बोधिसत्वों को लगता था कि भारत लोकतंत्र के लिए नहीं बना। हम असफल हो जाएंगे। गुजरे 77 साल उनकी भविष्यवाणी को भोथरा साबित करने वाले साबित हुए हैं। हम आगे भी उन्हें ऐसे ही निराश करते रहेंगे।

स्कैन करें
आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

आजकल

शशि शेखर

आज से चार दिन बाद हिन्दुस्तान अपनी आजादी की 77वीं वर्षगांठ मनाने जा रहा है। कहते हैं, हर भद्र इंसान को अपने जन्मदिन की खुशी मनाते हुए अपनी पिछली जिंदगी पर भरपूर नजर जरूर डालनी चाहिए। गुजरे वर्षों में हमने क्या खोया और क्या पाया? क्या भूलें कीं और उनके सुधार का जरिया क्या है? इस 15 अगस्त आप इस सिलसिले में एक हिन्दुस्तानी के नाते क्या सोचेंगे?

पहले गर्व करने योग्य मुद्दों की चर्चा।

अपने चारों ओर नजर दौड़ाइए। ऐसा लगेगा, जैसे आग लगी हुई है। बांग्लादेश इस सिलसिले की ताजातरीन कड़ी है। वहां खूंरेजी का डरावना सिलसिला जारी है। बेकाबू हिंसा में अब तक 450 से अधिक लोग मारे जा चुके हैं। वहां हालात इतने बेकाबू हुए कि प्रधानमंत्री शेख हसीना वाजेद को एक बार फिर जलावतनी पर मजबूर होना पड़ा। अब संगीनों के साये में जन्मी अंतरिम सरकार हालात पर काबू पाने की कोशिश में है। आज जो लोग शेख हसीना को तानाशाह और बददिमाग करार दे रहे हैं, वे कभी उनके लिए पलक-पांवड़े बिछाए बैठे थे। ऐसे लोग भूल जाते हैं कि 1971 में आजाद होने के चार साल के भीतर राष्ट्रपिता कहे जाने वाले शेख मुजीबुर्रहमान की उनके आवास में हत्या कर दी गई थी। शेख हसीना उस रात देश से बाहर न होतीं, तो वह भी मारी जातीं। बाद में भले ही वहां कोई पदेन राष्ट्राध्यक्ष नहीं मारा गया, पर दुर्भाग्यजनक हालात में कई बार तख्तापलट अवश्य हुआ। खुद शेख हसीना 2008 के जानलेवा प्रदर्शनों के बाद सत्ता में लौटी थीं।

बांग्लादेश अपने पितृदेश पाकिस्तान जितना बदनसीब भले न हो, पर आदि देश भारत की तरह खुशनसीब भी नहीं है।

बांग्लादेश में 2009 से अगले पंद्रह वर्ष अब निखालिस शेख हसीना वाजेद के थे। उन्होंने अर्थव्यवस्था को अवश्य धार दी, लेकिन इस बार वह जम्हूरियत की नकाब में तानाशाह थीं। यह नकाब वक्त के साथ उतरती गई और पिछली जून के चुनाव वह सिर्फ दमन के जरिये जीती थीं। इन चुनावों की जमकर जगहंसाई हुई थी। भला विपक्ष को जंजीरों में बांधकर कराए गए चुनाव को कैसे निष्पक्ष कहा जा सकता है? भावुक बंगालियों को उनसे यह उम्मीद न थी। वे सड़कों पर उतर आए और हसीना को दर-बदर होने पर मजबूर कर दिया। अब अराजकतावादियों की बन आई है। जिस प्रकार सुप्रीम कोर्ट को घेरकर प्रधान न्यायाधीश ओबैदुल हसन को इस्तीफे के लिए बाध्य किया गया, वह भयावह है।

वहां जिस तरह हिंदुओं पर हमले हो रहे हैं, वह भारत के लिए चिंताजनक है। मुझे यहां एक ऐसे अधिकारी की बात याद आ रही है, जिसने वर्ष 2022 में निजी बातचीत में दावा किया था कि दस वर्षों से कम वक्त में यह देश अफगानिस्तान जैसा बन जाएगा। हिंसा के मौजूदा दौर में जिस तरह 38 जिलों में हिंदुओं को बेइज्जत किया गया, मंदिर तोड़े गए, उससे इस आशंका को बल मिलता है।

बांग्लादेश पाकिस्तान की कोख से जन्मा था। पाकिस्तान खुद चिर अस्थिरता का शिकार है। वहां सेना और कट्टरपंथियों की जुगलबंदी कहर ढा रही है। इस संबंध में काफी कुछ कहा-लिखा जा चुका है, इसलिए अगले पड़ोसी नेपाल की ओर बढ़ते हैं। तथाकथित क्रांति के बाद वहां वर्ष 2008 में राजशाही की जगह लोकशाही ने जरूर ले ली, पर सरकारों में स्थायित्व का चलन यहां भी नहीं देखने को मिलता। पिछले ही महीने वहां पुष्प कमल दाहाल 'प्रचंड' को हटाकर केपी शर्मा 'ओली' पुनः प्रधानमंत्री बन बैठे हैं। कभी राजशाही से हुई जंग में ये दोनों कॉमरेड जंग की जुगलबंदी किया करते थे। बगल के म्यांमार में जुंटा (फौज) की हुकूमत है और श्रीलंका भी कुछ माह पूर्व बांग्लादेश जैसे हालात से गुजरा है। रह बचा मालदीव, तो वहां राष्ट्रपति मुइज्जू चुने तो विधिवत गए हैं, पर लोकतांत्रिक मूल्यों में उनका भरोसा नहीं। ऐसा होता, तो वह अपने ही दो मंत्रियों को 'काला जादू' के आरोप में जेल न भेज देते।

तय है, दक्षिण एशिया में अकेला भारत लोकतंत्र का स्थायी लाइट हाउस साबित हुआ है।

हम लड़खड़ाते हैं, फिर भी बढ़ते रहते हैं। ऐसा नहीं है कि हमारे यहां अस्थिरता के दौर नहीं आए। गुजरे साढ़े सात स्वतंत्र दशकों में से लगभग 30 साल गठबंधन सरकारें रहीं। इनमें से चरण सिंह, वीपी सिंह, चंद्रशेखर, इंदर कुमार गुजराल और एचडी देवेगौड़ा की सरकारें लंबी न थीं, पर आयाराम-गयाराम के इस दौर में भी भारतीय अपने विश्वास से नहीं डिगे। यह सुकून की बात है। क्या इतना काफी है? यकीनन नहीं।

स्वतंत्रता दिवस के उल्लास की ओर बढ़ते हुए सोचना ही होगा कि हम अनावश्यक वैचारिक उद्वेलनों के शिकार क्यों हो रहे हैं? बांग्लादेश में हादसों की शुरुआत के साथ ही सोशल मीडिया पर कुकुरमुत्ते की तरह उमड़ पड़े विचारकों ने भारत के बारे में अपशकुनी आशंकाओं की 'तिजारत' शुरू कर दी। यहां तिजारत शब्द का प्रयोग जान-बूझकर कर रहा हूं। सोशल मीडिया के तमाम प्लेटफॉर्म ज्यादा 'हिट्स' और 'व्यूअर्स' के बदले निश्चित रकम चुकाते हैं। जिसके जितने व्यूज, उसके उतने पैसे! यही वजह है कि कई लोग भय का व्यापार करने में जुट पड़े हैं। अभी वे बांग्लादेश पर स्यापा कर रहे हैं। यही लोग पहले श्रीलंका या पाकिस्तान को लेकर समान दावे कर चुके हैं। राजनीतिज्ञ ऐसी लपटों को कुतर्कों का ईंधन प्रदान करते हैं। मुझे विदेश मंत्री की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सम्हाल चुके एक वरिष्ठ राजनेता का बयान चौंका गया। वह कह रहे थे कि भारत में भी बांग्लादेश जैसे हिंसक प्रदर्शन संभव हैं। उनसे यह उम्मीद नहीं थी।

हम सभी जानते हैं, भारत पाकिस्तान, बांग्लादेश या श्रीलंका जैसा नहीं है।

हमारी विशालता, बहुलता और सहअस्तित्व की शानदार परंपरा हमें भटकने से रोकती है। कुछ लोग कहते हैं कि पाकिस्तान हमारा सहोदर है, वह बेपटरी हुआ, तो हम क्यों नहीं हो सकते? वे भूल जाते हैं कि साल 1947 की 15 अगस्त को हम अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हुए थे, हजारों साल पुरानी हिन्दुस्तानियत से नहीं। पाकिस्तान में धर्म की आड़ में जो नई रहगुजर गढ़ने की कोशिश हुई, वह आत्मघाती साबित हुई। बांग्लादेश की भी यही दिक्कत है। वह बहुसंख्यकवाद और अपनी सेक्युलर परंपरा के बीच झूल रहा है। शांति के सतत संवाहक बौद्धों ने भी जब म्यांमार या श्रीलंका में बांग्लादेश जैसे प्रयोग करने की कोशिश की, तो वे औंधे मुंह जा गिरे। भूलें नहीं, धर्म संस्कृति का हिस्सा होता है। संस्कृति धर्म का नहीं। दोनों एक-दूसरे को सतत समृद्ध करते चलते हैं। उन्हें एक-दूसरे पर लादने की कोशिश हर बार आत्मघाती साबित हुई है।

मैं निस्संकोच कह सकता हूं कि भारतीय उप-महाद्वीप के लिए कठमुल्लापन जहर है। 15 अगस्त हर वर्ष हमें इसका स्मरण कराता है।

एक और बात। हमें आशंकाओं के सौदागरों से भी सचेष्ट रहना होगा। बंगाल को भुखमरी की मृत्यु-शय्या पर धकेलने वाले चर्चिल और पश्चिम के तमाम स्वनामधन्य बोधिसत्वों को लगता था कि भारत लोकतंत्र के लिए नहीं बना। हम असफल हो जाएंगे। गुजरे 77 साल उनकी भविष्यवाणी को भोथरा साबित करने वाले साबित हुए हैं। हम आगे भी उन्हें ऐसे ही निराश करते रहेंगे।

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

जीना इसी का नाम है

दुष्यंत दुबे
सामाजिक कार्यकर्ता

मियामी की उस एक मौत ने जीने का मकसद दे दिया

दुष्यंत ने जब उसमें दर्ज लिंक को खोला, तो देखा कि वह युवक बिस्तर पर लेटा हुआ है, उसने गोलियां निगल ली हैं। हजारों लोग उसे देख रहे हैं। अपनी टिप्पणियों से उसे और उकसा रहे थे। दुष्यंत कांप गए, एक युवा दुनिया से हमेशा के लिए जाने वाला है और लोग आनंद ले रहे हैं?

यह दुनिया विचित्र है और जीवन अद्भुत! इसमें एक तरफ बेहिसाब नफरत है, तो दूसरी ओर बेपनाह मोहब्बत। जिस क्षण अखबार और खबरिया चैनल आपको गाजा, ढाका, बगदाद और तेहरान की जुल्म व ज्यादती की कहानियां पढ़ा-दिखा रहे हैं, ठीक उन्हीं पलों में वे सर्वोच्च बलिदान व बेमिसाल इंसानियत के किस्से भी बता रहे हैं। शायद इसीलिए निराशा और हताशा बहुत देर तक आपके इर्द-गिर्द नहीं टिक पाती। ऐसे में, हर वह शख्स हमारे सलाम का हकदार है, जो अपने कर्मों से इस संसार को सुंदर बनाने के साथ-साथ दूसरों को सद्कर्म के लिए प्रेरित कर रहा है। दुष्यंत दुबे एक ऐसा ही नाम हैं।

करीब 33 साल पहले अहमदाबाद में पैदा हुए और पले-बढ़े दुष्यंत के पिता एक कारोबारी हैं। उनकी अपनी एक नर्सरी है, जिसमें उगाए गए पौधे वे अक्सर लोगों को दान किया करते हैं। दुष्यंत ने बचपन से ही पिता को गुजराती लोक-कलाकारों की मदद करते या फिर पर्यावरण संरक्षण के लिए सक्रिय देखा, ऐसे में स्वाभाविक ही उनके भीतर समाजसेवा का बीज अंकुरित हुआ। अलबत्ता, आयु के अनुरूप उनकी रुचि का मुख्य क्षेत्र था कंप्यूटर। साइबर संसार में गहरी दिलचस्पी ने उन्हें बगैर किसी औपचारिक शिक्षा या प्रशिक्षण के इसमें इतना माहिर बना दिया था कि वह स्कूली दिनों में ही वेबसाइट बनाने और डिजिटल मार्केटिंग के जरिये पैसे कमाने लग गए थे।

साल 2007 की बात है। दुष्यंत तब 16 साल के रहे होंगे। वह एक फिटनेस वेबसाइट पर सक्रिय थे, तभी उनकी नजर एक पोस्ट पर गई, जिसमें अमेरिकी शहर मियामी के 19 वर्षीय नौजवान अब्राहम बिग्स (छद्म नाम) ने लिखा था कि वह 'लाइव स्ट्रीम' में मरने जा रहा है। दुष्यंत ने जब उसमें दर्ज लिंक को खोला, तो देखा कि वह युवक बिस्तर पर लेटा हुआ है, उसने गोलियां निगल ली हैं। हजारों लोग उसे देख रहे थे। सैकड़ों कमेंट के जरिये उसे और उकसा रहे थे। दुष्यंत कांप गए कि एक युवा इस दुनिया से हमेशा के लिए जाने वाला है और लोग इसका आनंद ले रहे हैं? उन्होंने अब्राहम का मूल नाम और नंबर खंगाला और वहां ऑनलाइन उपस्थित अमेरिकियों से स्थानीय पुलिस को बुलाने की गुहार लगाई, मगर सबकी यही प्रतिक्रिया थी कि यह महज एक स्टंट है।

दुष्यंत से रहा नहीं गया, उन्होंने मियामी पुलिस को ई-मेल किया, मगर वह बाउंस हो गया। बिना हताश हुए उन्होंने मियामी पुलिस की वेबसाइट ढूंढ़ी और उस पर दिए गए नंबर पर मां के नंबर से फौरन फोन किया। मां के फोन में अंतरराष्ट्रीय कॉल की सुविधा थी। पुलिस वाले ने टालने के अंदाज में इलाके के शेरिफ से बात करने को कह दिया। बेचैन दुष्यंत ने उस शहर के शेरिफ को फोन किया, तो सूचना मिली कि पुलिस रास्ते में है। वह वापस स्ट्रीम पर पहुंचे, तो देखा कि अब्राहम के कमरे में पुलिस दाखिल हो चुकी है और उसके बाद कैमरा ऑफ हो

गया। चंद घंटों के बाद उसी वेबसाइट पर अब्राहम की बहन ने उसकी मौत की सूचना पोस्ट की थी। अगली सुबह दुष्यंत के इनबॉक्स में हजारों पैगाम थे, जिनका लब्बोलुआब यही था कि इस बेरहम दुनिया को आप जैसों की बहुत जरूरत है।

इस वाकये ने दुष्यंत को झकझोर दिया था। वह सोचने लगे कि संवेदनहीन हुजूम, उदासीन सिस्टम और चंद मिनटों की देरी ने कैसे एक उलझे हुए नौजवान को लाश में बदल दिया? किशोरवय दुष्यंत ने उसी समय उद्यमी बनने और खूब पैसे कमाने के लक्ष्य को हाशिये पर डाल दिया। स्कूली पढ़ाई के साथ-साथ वह अहमदाबाद की स्वयंसेवी संस्थाओं से बतौर स्वयंसेवक जुड़ गए। गरीब बच्चों को पढ़ाकर या जख्मी जानवरों की सेवा-उपचार करके उन्हें काफी सुकून मिलता।

इग्नू से बी कॉम की डिग्री आ गई, तो अहमदाबाद में संगीत के क्षेत्र में एक नई पहल 'मेटलाबाद' से दुष्यंत जुड़े। फिर किसी ने सुझाव दिया कि स्टार्टअप के इको सिस्टम को समझने के लिए बेंगलुरु से बेहतर कोई शहर नहीं। फिर क्या था, साल 2016 में दुष्यंत बेंगलुरु आ गए। इस महानगर में उन्हें जानने वाला कोई न था। न ही उनके पास कोई नौकरी थी। इंदिरा नगर में रहने की जगह तो मिल गई थी, मगर सवाल था कि क्या और कैसे शुरुआत की जाए? पुराना तजुर्बा काम आया। वह बेंगलुरु की कुछ स्वयंसेवी संस्थाओं से जुड़ गए। रक्तदान और स्वास्थ्य शिविरों के जरिये लोगों से उनकी अच्छी जान-पहचान बनने लगी। इसी बीच उन्हें 'स्पोर्ट्सकीड़ा' प्लेटफॉर्म में कंटेंट एडीटर का काम मिला। सात महीने काम करने के बाद वह 'क्योर स्किन' में ग्रोथ मैनेजर के पद पर काम करने लगे।

दुष्यंत के हिस्से में फिर ईशा फाउंडेशन और महिंद्रा समूह के सम्मानित पद भी आए, मगर जब उनकी जिम्मेदारियां समाजसेवा की चाहत के आड़े आने लगीं, तो उन्होंने उनसे मुक्ति पा ली। दुष्यंत अब तक इस महानगर के मिजाज से पूरी तरह वाकिफ हो चुके थे। उन्होंने शहर में हमख्याल दोस्तों का एक नेटवर्क भी बना लिया था। कोरोना महामारी के समय अहमदाबाद लौटने के बजाय दुष्यंत ने बेंगलुरु में रुककर अपने पैसे से बेबस लोगों के भोजन की व्यवस्था करने को कहीं ज्यादा जरूरी माना। जब कोरोना के नियंत्रित होने के बाद लोग बेंगलुरु लौटने लगे, तब उन्हें कई तरह की परेशानियां सामने आने लगीं। दुष्यंत ने एक पोस्ट डाली कि यदि किसी को कोई भी परेशानी हो, तो वह उसकी मदद के लिए हाजिर हैं।

दुष्यंत को लगा कि लोग बहुत नोटिस नहीं लेंगे। मगर अब

दुष्यंत से ज्यादातर साइबर अपराध, यौन उत्पीड़न, घरेलू हिंसा व नागरिक समस्याओं के मामलों में मदद मांगी जाती है। उनके संगठन से जुड़े 5,300 से अधिक स्वयंसेवियों ने अब तक हजारों लोगों की मदद की है। बकौल दुष्यंत बेंगलुरु के 50 हजार लोगों के पास उनके नंबर हैं।

तक उनकी संस्था सेंट ब्रोसेफ फाउंडेशन से 7,500 से अधिक बेंगलुरु वासियों द्वारा मदद मांगी जा चुकी है। ज्यादातर साइबर अपराध, यौन उत्पीड़न, घरेलू हिंसा, छेड़छाड़ और नागरिक समस्याओं से जुड़े मामलों में मदद की गुहार लगाई जाती है। दुष्यंत के संगठन से जुड़े 5,300 से अधिक स्वयंसेवियों ने अब तक हजारों लोगों की मदद की है। बकौल दुष्यंत बेंगलुरु के कम से कम 50 हजार लोगों के पास उनके नंबर हैं। उन्हें यूं ही 'बैटमैन ऑफ बेंगलुरु' नहीं कहा जाता!

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

रानी गाइदिन्ल्यू
स्वतंत्रता सेनानी

जब लूट के खिलाफ लड़ गई वह लड़की

यह कैसी लूट है कि पहले गोरे लुटेरे सूचना देंगे कि हम फलां दिन आ रहे हैं और उसके बाद तुम तय समय पर डोली लेकर लुटेरों को बड़ी सड़क तक लेने जाओ। लुटेरों का ढोल-बाजे, माला-उपहार से स्वागत करो। ससम्मान डोली में बिठाओ, उनकी डांट-फटकार भी सुनते चलो।

वहां जल से सराबोर सांवले बादल सुंदर स्नेहिल पहाड़ियों को गले लगाकर बरसते थे। प्यार में पानी-पानी हो जाती थीं घाटियां और पानी पूरी विनम्रता के साथ हर ऊंची चीज के बगल से सिर झुकाए कलकल बह निकलता था। लोग भी ऐसे ही थे, सिर झुकाए शालीनता की शॉल ओढ़े हुए, पर तब के राजा अंग्रेज बिल्कुल अलग थे। लोभ से लबालब अंग्रेजों के लिए धन ही सब कुछ था। भारत के कोने-कोने को लूट लेने को लालायित अंग्रेज न जाने कहां-कहां पहुंच जाते थे। मणिपुर के एकांत में भी अंग्रेजों ने लगान से आतंक मचा रखा था।

वसूली का वार मणिपुर में स्थानीय लोगों को तबाह किए हुए था। साथ ही, अंग्रेजों और उनके दूसरे साहबों की सेवा भी स्थानीय लोगों की मजबूरी थी। ऐसी मजबूरी का सामना एक किशोरी ने भी किया, जिसकी उम्र बमुश्किल अपने 13वें साल में चढ़ी थी। उसे लोगों ने लगा दिया अंग्रेज बहादुरों की सेवा में और एक ही बार में मन झटके से उचट गया। बेगैरतों की बेगारी या सीधे अत्याचार? यह कैसी लूट है कि पहले लुटेरे सूचना देंगे कि हम फलां दिन आ रहे हैं और उसके बाद तुम तय समय पर डोली लेकर लुटेरों को बड़ी सड़क तक लेने जाओ। लुटेरों का ढोल-बाजे, माला-उपहार से स्वागत करो। ससम्मान डोली में बिठाओ, उनकी डांट-फटकार भी सुनते चलो। लुटेरों को गांव लाओ, ऊंचा आसन-गद्दी दो, सत्कार करो, सारी वसूली सामने रख दो। गोरे लुटेरों का जब तक मन करे, मौज कराओ। लूटने के बाद जब वे लौटने को कहें, तो फिर डोली में बिठाओ और छोड़कर आओ। हंस-हंसकर हाथ जोड़ो, बार-बार कहो कि आप फिर आइएगा, सेवा का मौका दीजिएगा, हम इंतजार करेंगे।

एक बार की लूट-सेवा ही उस किशोरी को ऐसी चुभी कि उसके मन में सवालों ने बवंडर खड़ा कर दिया। अगर हम बेगारी न करें, तो जान से हाथ धोने का खतरा है। अंग्रेजों के चमचे या गुर्गे भी कम नहीं थे, उन्हें भी बेगारी कराने की आदत पड़ी हुई थी। लूट-सेवा में कमी होते ही वे अंग्रेजों के कान भर देते थे। अंग्रेजों को लगता था कि शिकायत छोटी ही सही, अगर पनप गई है, तो उसे कुचल देने में ही भलाई है। पता नहीं, कब शिकायत विद्रोह में बदल जाए, पर विद्रोह का बिगुल तो मणिपुर में बज चुका था। 23 साल के एक नौजवान हैपोउ जादोनांग ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह कर दिया था। वह नौजवान क्रांतिकारी उस किशोरी के ही चचेरे भाई थे। किशोरी ने भी झुक-झुककर झेलने के बजाय विद्रोह का रास्ता चुन लिया था।

तब अंग्रेज केवल लूट ही नहीं रहे थे, नगाओं और जनजातियों की संस्कृति बदलने में लगे थे, ईसाई प्रचारकों का जाल धीरे-धीरे मोटा रहा था, पर जादोनांग एक दिन अंग्रेजी सेना के हाथ लग गए। अंग्रेजों ने मौका गंवाए बिना जादोनांग को फांसी पर लटका दिया। अब आंदोलन-विद्रोह की बागडोर उस किशोरी के हाथ में आ गई। कम उम्र में ही देशप्रेम से ओत-प्रोत किशोरी ने कमाल दिखाना शुरू किया। साफ घोषणा हो गई कि कोई बेगारी नहीं करेगा। अंग्रेजों को हम पर शासन करने का कोई हक नहीं है। ब्रिटिश सरकार को हाउस टैक्स वसूलने का कोई हक नहीं है। बिना पैसे लिए किसी अंग्रेज का एक सामान उठाने की भी जरूरत नहीं है। गांव-गांव में विद्रोहियों का संगठन मजबूत होने लगा। अंग्रेजों तक रिपोर्ट पहुंच गई कि नगा हिल्स, मणिपुर व उत्तरी कछार पहाड़ियों के बड़े क्षेत्र में एक लड़की गाइदिन्ल्यू ने ब्रिटिश शासन के लिए बड़ा खतरा पैदा कर दिया है। गाइदिन्ल्यू को पकड़वाने में मदद करने वालों को 500 रुपये इनाम देने की घोषणा हो गई। प्रलोभन दिया गया कि जो गांव गाइदिन्ल्यू को पकड़वाने में मदद करेगा, उसका लगान माफ कर दिया जाएगा।

साल 1932, अक्तूबर में एक दिन सुबह होने से पहले ही अंग्रेजों ने हमला बोल दिया, बहुत सारे विद्रोही मारे गए, गाइदिन्ल्यू पकड़ी गईं। अंग्रेज भी दंग थे कि इतनी छोटी लड़की ने इतना बड़ा विद्रोह खड़ा कर नाक में दम कर दिया है और अब अपने 4,000 योद्धाओं के लिए किला बना रही है। खैर, गाइदिन्ल्यू को ताउम्र कैद की सजा हुई। डरे हुए अंग्रेजों ने उन्हें अपनी सुरक्षा के लिए अलग-अलग जेलों में रखा। कभी गुवाहाटी, कभी शिलांग, आइजोल, इंफाल, कोहिमा जेल में रखा गया और वह तुरा जेल से तभी आजाद हुईं, जब देश आजाद हुआ।

अब खूब याद किया जाता है, पंडित नेहरू आजादी से बहुत पहले ही गाइदेन्ल्यू (1915-1993) से मिलने जेल गए थे और उन्हें रानी शब्द से विभूषित करते हुए लिखा था, 'एक दिन आएगा, जब भारत उन्हें याद करेगा, उन्हें संजोएगा।' वाकई, यह देश इस वीरांगना का ऋणी है, जिन्होंने 15 वर्ष लगातार जेल में बिताए, क्योंकि आजादी से कम उन्हें कुछ मंजूर न था।

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

वृद्ध पूंजीवाद के दौर में मोहब्बत

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

राजनीति में मोहब्बत की दुकान खुले न खुले, उसमें मोहब्बत मिले न मिले, पर हिंदी साहित्य के इतिहास में मोहब्बत ही मोहब्बत रही है। ऐसा दावा करते हुए आप हिंदी साहित्य के इतिहास में दर्ज 'प्रेम काव्य' की महान परंपरा की लाख दुहाई दें और कहते रहें कि आदि कवि का पहला श्लोक ही एक मिथुनरत क्रौंच पक्षी के प्रेम के पक्ष में लिखा गया शिकायतनामा है- *मां निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः...* या आप सिद्ध करते रहें कि हिंदी साहित्य का अतीत प्रेम का, इश्क का, मुहब्बत का महासागर है और उसने हमेशा *प्रेमा पुमर्थो महान* के गीत गाए हैं।

आप यह भी कह सकते हैं कि जयदेव से लेकर आधुनिक काल के एक बड़े हिस्से तक प्रेम रस ही साहित्य की मुख्यधारा रहा है। वह कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, जायसी, कुतुबन, मंझन, रहीम, रसखान, घनानंद, बोधा आदि की कविताओं में छाया रहा है। फिर प्रसाद के *आंसू* व *कामायनी* ने, महादेवी के गीत और निराला-पंत आदि ने आधुनिक प्रेम कविताओं को संभव किया और फिर बच्चन ने *इस पार प्रिये तुम हो मधु है, उस पार न जाने क्या होगा* और *मधुशाला* जैसे प्रेम काव्य दिए।

इसी क्रम में नीरज ने प्रेमगीतों की गंगा बहाई और धर्मवीर भारती ने *कनुप्रिया* के साथ-साथ *इन फिरोजी होठों पर बर्बाद मेरी जिंदगी* जैसे ऐंद्रिक गीत लिखकर प्रेम काव्य को नए आयाम दिए, पर एक दिन इस प्रेम कविता को विचारधारा और आधुनिकतावाद की ऐसी नजर लगी कि प्रेम कविताओं की जगह अज्ञेय की *कलगी बाजरे की* ने ले ली। कवि बाजरे की कलगी रूपी 'मिस इंडिया' के छत्तीस-चौबीस-छत्तीस के हिसाब से उपमान खोजता रहा कि *ये (पुराने) उपमान मैले हो गए हैं।* इस चक्कर में प्रेम तो गया ही 'मिस इंडिया' भी हाथ से निकल गई।

फिर अकविता ने 'जीभ और जांघ का चालू भूगोल' चलाकर हिंदी कविता को प्रेम के कोमल भाव से मुक्त कर दिया। प्रेम कविता या तो मंचीय हो गई या फिल्मी गीतों में रह गई। हिंदी की 'पॉपुलर कल्चर' में जो कुछ 'पॉप प्रेम' बचा, वह फिल्मी प्रेमकथाओं व गीतों के कारण बचा। हिंदी के प्रगतिशीलों ने प्रेम कविता को सीधे प्रतिक्रियावादी खित्ते में डाल दिया!

हिंदी में ऐसे कई प्रगतिशील ब्रह्मचारी हुए, जिन्होंने प्रेम कविता को अपराध बना दिया। यूं कइयों ने एक गांव में छोड़ी, दूसरी दिल्ली में की। वे 'फॉरेन' प्रेम कविता पर तो कुर्बान होते, लेकिन देसी प्रेम कविता को क्रांति विरोधी बताते। एक ओर विचारधारा की मार, दूसरी ओर कॉरपोरेट की डबल मार ऐसी कि प्रेम की जगह सेक्स ने ले ली और हालत यहां पहुंच गई कि यशेषणा का मारा या मारी कोई जब तक सेक्स पर खुलकर बात न करे, तब तक कविता क्या और कहानी क्या?

वृद्ध पूंजीवाद के इस दौर में मोहब्बत या प्रेम या इश्क की यही परिणति होनी थी, क्योंकि आज 'हेट' ही 'मार्केट' की सुचालक है। इस मार्केट में बिकने वाले प्रेम का विखंडन करें या उसे जरा सा खुरचें, तो उसके नीचे 'हेट' निकलती है, लेकिन नफरत से कविता नहीं होती। घृणा कविता की दुश्मन है। इसलिए अच्छी कविता अब एक 'असंभावना' है!

अगर कविता को संभव करना है, तो हे कवि! कविता में प्रेम रस को वापस लाओ। कविता को प्रेम की भाषा सिखाओ, नहीं तो कविता 'ईलू-ईलू' करती रह जाएगी और कोई न कोई हमें चुल्लू में उल्लू बनाता रहेगा। याद करें, ऐसे ही 'हेट' भरे में समय में कभी कबीर ने कहा था कि प्रेम खरीदने-बेचने की चीज नहीं, क्योंकि *प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय!/ राजा परजा जेहि रुचै, सीस देई ले जाय!!*

इसलिए मैं अभी भी इंतजार में हूं कि कोई आए, कविता में प्रेम रस बरसाए और सारी 'हेट' बह जाए; जो सबको बताए, 'हेट' आसान है, मगर *ये इश्क नहीं आसां इतना ही समझ लीजे, इक आग का दरिया है और डूब के जाना है!*

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

हरित ऊर्जा देश में अगला दशक हरित ऊर्जा के युग के तौर पर जाना जाएगा। सरकार इसके नीतिगत पहलुओं को मजबूत करने के लिए निजी क्षेत्र के अलावा अंतरराष्ट्रीय सहयोग के रास्ते भी तलाश रही है। भारत स्वच्छ और हरित ऊर्जा स्रोतों के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। ये पर्यावरण सम्मत और किफायती ऊर्जा स्रोत हैं। राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन इस दिशा में एक बड़ा और महत्वपूर्ण कदम है।

अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में तेजी से बढ़ते कदम

ऋषभ मिश्रा, असिस्टेंट प्रोफेसर
कानपुर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कानपुर

हरित ऊर्जा, प्राकृतिक स्रोतों जैसे सूरज की रोशनी, हवा, बारिश, ज्वार, पौधे, शैवाल और भू-तापीय गर्मी से प्राप्त होती है। ये ऊर्जा संसाधन पर्यावरण के अनुकूल हैं और हमारे कार्बन फुटप्रिंट को कम करते हैं। हरित ऊर्जा, हालांकि उन ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करती है, जो पूरी दुनिया में आसानी से उपलब्ध हैं। इनमें ग्रामीण और दुरदराज के इलाके भी शामिल हैं, या ऐसे क्षेत्र जहां बिजली की पहुंच नहीं होती। अक्षय ऊर्जा प्रौद्योगिकी में प्रगति के कारण सौर पैनलों, पवन चक्कियों और हरित ऊर्जा के अन्य स्रोतों की लागत कम हुई है। इससे बिजली उत्पादन करने की क्षमता तेल, गैस, कोयला की उपयोगिता कंपनियों के बजाय लोगों के हाथों में आ गई है। दुनिया की लगभग 30 प्रतिशत बिजली अक्षय ऊर्जा से आती है, जिसमें जल विद्युत, सौर, पवन और अन्य स्रोत शामिल हैं। कोस्टारिका ने पनबिजली, भू-तापीय, पवन, बायोमास और सौर ऊर्जा के संयोजन से लगातार सात वर्षों तक नवीकरणीय स्रोतों से अपनी 98% बिजली का उत्पादन किया है। अनुमानतः वर्ष 2050 तक, दुनिया में ऊर्जा की सबसे बड़ी मात्रा में आपूर्ति वैकल्पिक या अक्षय ऊर्जा स्रोतों द्वारा की जाएगी।

जरूरी है अक्षय ऊर्जा में बढ़त

भविष्य में दुनिया की आबादी में 50-100% की वृद्धि और औद्योगिक तथा नव विकसित औद्योगिक देशों में शहरीकरण सहित, आर्थिक कल्याण में वृद्धि, भविष्य के आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी परिवर्तनों के कारण चुनौतियां स्पष्ट हैं। अक्षय ऊर्जा उन ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करती है, जिनकी भरपाई प्रकृति यानी सूर्य, हवा, पानी, पृथ्वी की गर्मी और पौधे लगातार करते हैं।

अक्षय ऊर्जा प्रौद्योगिकी के द्वारा कोयले और प्राकृतिक गैस के विपरीत, महत्वपूर्ण मात्रा में सीओ2 और जलवायु परिवर्तन में योगदान देने वाली अन्य ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन के बिना बिजली और ईंधन उत्पन्न कर सकते हैं। सभी जानते हैं कि जीवाश्म ईंधन जलाने से वातावरण में ग्रीन हाउस गैसें निकलती हैं, जो ग्लोबल वार्मिंग में योगदान देती हैं। जलवायु वैज्ञानिकों के अनुसार पिछली शताब्दी से पृथ्वी के औसत तापमान में चिंताजनक रूप से वृद्धि हुई है। जीवाश्म ईंधन को जब जलाया जाता है तो अन्य प्रदूषक भी हवा, मिट्टी और पानी में मिल जाते हैं। ये प्रदूषक पर्यावरण और मनुष्यों पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। वायु प्रदूषण से अस्थमा, निमोनिया, फेफड़ों के कैंसर आदि जैसी बीमारियां हो सकती हैं। तापीय ऊर्जा संयंत्रों से निकलने वाले सल्फर डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड के कारण होने वाली अम्लीय वर्षा पौधों और जलीय जानवरों को प्रभावित करती है। नाइट्रोजन ऑक्साइड भी फोटोकेमिकल स्मॉग का कारण बनती है। अक्षय ऊर्जा हमें ऊर्जा स्वतंत्रता और सुरक्षा विकसित करने में भी मदद करेगी। कुछ पेट्रोलियम ईंधन को वनस्पति तेल से बने ईंधन से बदलकर, जैव ईंधन के तौर पर न केवल पैसे बचाए जा सकते हैं, बल्कि ऊर्जा सुरक्षा को भी मजबूत किया जा सकता है।

ऊर्जा संरक्षण की आवश्यकता

ऊर्जा की मांग की आवश्यकता को पूरा करने के लिए ऊर्जा का उचित उपयोग बहुत महत्वपूर्ण है। दुनियाभर के विशेषज्ञों की राय है कि बिजली उत्पादन के लिए, अक्षय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग किया जाना चाहिए। पवन, पन-बिजली, भू-तापीय, सौर और बायोमास की सतत प्रकृति, ऊर्जा आपूर्ति कंपनियों को उनका उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसके अलावा, लोग अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने घरों पर छोटे सौर पैनल स्थापित कर सकते हैं। कई वाहन पैसोलीन (जो एक जीवाश्म ईंधन है) से चलते हैं। पैसोलीन एक दिन समाप्त हो जाएगा और वाहन उद्योग को अपना व्यवसाय जारी रखने के लिए कुछ नई प्रकार की ऊर्जा जैसे हाइब्रिड सिस्टम या इलेक्ट्रिक वाहनों का सहारा लेना चाहिए। इसके अलावा कई बार हम लाइट, पंखे और अन्य उपकरणों को बंद करने पर ध्यान नहीं देते हैं। उपयोग में न होने पर लाइट, एसी और हीटर बंद करने से प्रतिदिन 282 किलोवाट ऊर्जा की बचत की जा सकती है। अत्यधिक उद्दीप्त लैंप अब लगभग प्रकाश उत्सर्जक डायोड (एलईडी) बल्बों से बदल दिए गए हैं। 43 वाट के हैलोजन बल्ब या 60 वाट के पारंपरिक बल्ब जितना प्रकाश देने के लिए केवल 12 वाट का एलईडी बल्ब लगता है। इससे धन और ऊर्जा दोनों की बचत होती है।

धन और ऊर्जा दोनों की बचत

विभिन्न प्रतिष्ठानों में बिजली के बिलों के बड़े प्रतिशत के लिए एयर कंडीशनिंग और हीटिंग जिम्मेदार हैं। हम एयर कंडीशनर और हीटर के थर्मोस्टेट को कुछ डिग्री तक समायोजित कर सकते हैं और इनके इस्तेमाल के सभी फायदे ले सकते हैं। उदाहरण के रूप में, यदि हीटर आमतौर पर चरम सर्दियों में 71 डिग्री फारेनहाइट पर सेट होता है, तो इसे 69 पर सेट करके हम ऊर्जा का संरक्षण कर सकते हैं और इसी तरह गर्मियों में एयर कंडीशनर में भी ऐसा किया जा सकता है। केवल कुछ डिग्री कम करने से ऊर्जा की खपत में कमी के साथ-साथ पैसे की भी बचत होती है।

अगला दशक अक्षय ऊर्जा का युग होने जा रहा है। सरकारी नीतिगत पहलों को मजबूत करने के लिए निजी क्षेत्र की सहायता और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है। इसके लिए ऐसे कार्यक्रमों की आवश्यकता है, जो प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, क्षमता निर्माण और सहयोगी अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा दें। हरित ऊर्जा स्रोतों में नवोन्मेष, विकासशील देशों को आर्थिक और स्थायी ऊर्जा प्रणालियों तथा प्रौद्योगिकियों को अपनाने में सक्षम करेगा।

कई उल्लेखनीय पहल हुईं, पर चुनौतियां बाकी

अक्षय ऊर्जा यह ऊर्जा है, जो एक असीमित स्रोत से प्राप्त होती है। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम अपनी आवश्यकता के लिए ऊर्जा के किस स्रोत का चयन करें और ऐसा क्यों करें? स्वच्छता, लागत, स्थिरता, दक्षता और पर्यावरणीय पहलुओं जैसे अधिकांश कारकों को ध्यान में रखा जाना चाहिए। यह एक कड़वा सच है कि दुनियाभर में कई उद्योग और वाणिज्यिक प्रतिष्ठान हरित होने के बजाय अब भी बिजली उत्पादन के लिए जीवाश्म ईंधन पर निर्भर हैं।

- भारत स्वच्छ और हरित ऊर्जा स्रोत के लिए प्रतिबद्ध है और राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन इस दिशा में एक बड़ा कदम है। इसका उद्देश्य कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस जैसे गैर-नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से जुड़े हानिकारक पर्यावरणीय प्रभावों को कम करना है।
- अक्षय ऊर्जा स्रोत का उपयोग करने का विकल्प न केवल लंबी अवधि में लागत बचत में तब्दील होगा, बल्कि पर्यावरण को जीवाश्म ईंधन उत्सर्जन के जोखिमों से बचाने में भी मदद करेगा।
- बिजली उत्पादन इकाइयों को धीरे-धीरे नवीकरणीय संसाधनों के उपयोग का सहारा लेना चाहिए।
- हरित ऊर्जा स्रोतों और उनके उपयोग के बारे में लोगों के बीच जागरूकता बढ़ाने में सोशल मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
- स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर पर पाठ्यक्रम में अक्षय या हरित ऊर्जा पर पाठ्यक्रम शुरू किए गए हैं, ताकि विद्यार्थियों को इनका महत्व बताया जा सके। स्वच्छ और हरित ऊर्जा बनाम जीवाश्म ईंधन, सार्वजनिक परिवहन बनाम सड़कें, इलेक्ट्रिक वाहन बनाम आंतरिक दहन इंजन वाहन और प्रकृति आधारित समाधान बनाम तेल और गैस उत्पादन पर हरित कार्य आजकल ध्यान आकर्षित करते हैं।

8500 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं सौर ऊर्जा बिड आधारभूत ढांचे के विकास के लिए केंद्रीय बजट 2024-25 में

930 करोड़ रुपए आवंटित किए गए पवन ऊर्जा के लिए बजट 2024-25 में, जबकि 2023-24 में यह 916 करोड़ रुपए था।

455 करोड़ रुपये कम कार्बनयुक्त इस्पात वाली योजनाओं पर खर्च करने की योजना 2029-30 तक

51 सोलर पार्क हैं भारत में। विश्व का सबसे बड़ा सोलर पार्क थार रेगिस्तान में है।

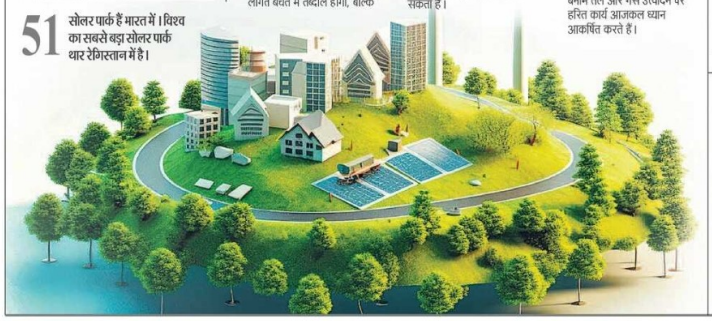

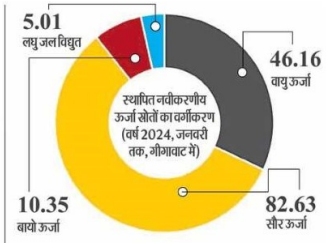

सौर ऊर्जा की बढ़ती चमक

स्थापित क्षमता (गीगावाट)

2014-15	3.7
2015-16	6.8
2016-17	12.3
2017-18	21.7
2018-19	28.2
2019-20	34.6
2020-21	40.1
2021-22	54.0
2022-23	66.8
2023-24	74.3

नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से विद्युत उत्पादन (बिलियन यूनिट)

2016	65.7
2017	81.51
2018	101.84
2019	126.76
2020	138.32
2021	147.25
2022	170.91
2023	203.55
2024	216.35

रोजनामचा

वर्ग पहेली 7691

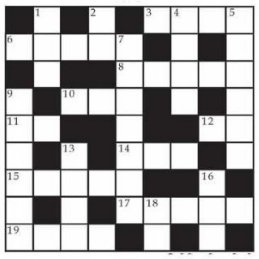

ऊपर से नीचे
1. छितराया हुआ; उलटा सीधा किया हुआ (3)
2. किसी पदार्थ का चौथाई अंश; चौथाई (2)
4. खाने-पीने का सुख भोगना; आबदाना; खानपान; ग्रहण करना; संगत करना (2,2)
5. चलता करना; प्रस्थान कराना (3,3)
7. समाप्ति करना; सबसे अंत में अपनी बात कह कर चर्चा समाप्त करना (4,3)
9. युद्ध जीतने के बाद फहराया गया झंडा; विजय सूचक चिह्न (3,3)
13. जिसने आसक्ति, राग आदि का परित्याग कर दिया हो; जो निस्पृह हो गया हो; शांत (4)
16. अवलोकन करना; ढूंढना; भेजना (3)
18. जनता; सात लोकों में से पांचवां लोक (2)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

बाएं से दाएं
3. लेखपाल; हिसाब रखने वाला गणक (4)
6. काम का दिन; कारोबारी समय (5)
8. दुख आदि के समय अपना सिर पीटने का भाव; माथा धुनना; माथापिट्टन (2,3)
10. भेंट; मुलाकात; समझौता; दोस्ती; मित्रता (3)
11. नीर; पानी; सलिल (2)
12. रात और सूर्योदय के बीच का समय; तड़का; प्रातःकाल (2)
14. खींचना; जकड़ना; बांधना; पूंजों को बैठाना (3)
15. जिसमें कई परतें हों; परतों वाला (5)
17. हाव भाव; चटक मटक (2,3)
19. शिल्पी; दस्तकार; निपुण; कुशल (4)

वर्ग पहेली 7690 का उत्तर

सुडोकू

7674 *मध्यम

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नी-नी खानों के नी खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

1	4	3	5	2	9	6	8	7
8	6	2	3	1	7	9	4	5
9	7	5	4	6	8	2	1	3
4	3	1	9	7	6	5	2	8
5	2	7	1	8	4	3	6	9
6	9	8	2	5	3	1	7	4
2	5	9	8	4	1	7	3	6
3	8	6	7	9	2	4	5	1
7	1	4	6	3	5	8	9	2

हल : सुडोकू नं.7673

व्रत और त्योहार

पंचांग | पं. ऋषुकांत गोस्वामी

11 अगस्त, रविवार, शक संवत् : 20 श्रावण (सौर) 1946, पंजाब पंचांग : 27 श्रावण मास प्रविष्टे 2081, इस्लाम : 05 सफर सन् 1446, विक्रमी संवत् : श्रावण शुक्ल सप्तमी (दिन-रात)। चंद्रमा तुला राशि में। (दिन-रात)।

सूर्य दक्षिणायन। सूर्य उत्तर गोल। वर्षा ऋतु। सायं 04.30 मिनट से सायं 6 बजे तक राहुकालम्। शीतला सप्तमी। गोस्वामी तुलसीदास जयंती।

वास्तु सलाह

आचार्य मुकुल रस्तोगी

सावन के महीने में वास्तु के अनुसार क्या करना शुभ है? –राम, दिल्ली

- आप एक डमरू लेकर आएं और अपने घर के ईशान कोण में स्थापित करें। यह आपके विचारों को संतुलित करेगा। पीतल का त्रिशूल लाकर ईशान कोण या मंदिर में रखें। यह दैहिक, दैविक, भौतिक तापों को दूर करता है। पीतल के नंदी अपने घर में रखें। नंदी जीवन में स्थायित्व देते हैं।

उत्तर प्रदेश में विद्युत उत्पादन और वितरण व्यवस्था को दुरुस्त करने के साथ ही बड़ी संख्या में नये कनेक्शन भी दिये गये हैं। 'नेट जीरो एमीशन' के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सौर ऊर्जा के जरिए बिजली की जरूरतों को पूरा करने पर फोकस किया गया है। पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के अंतर्गत सोलर पैनल लगाने का अभियान चलाया जा रहा है। विद्युत उपभोक्ताओं की समस्याओं के निस्तारण के लिए सिटिजन चार्टर को लागू किया गया है। बेहतर विद्युत वितरण व्यवस्था से लाइन लॉस में कमी आई है। नये विद्युत उपकेंद्रों की स्थापना के साथ ही पुराने उपकेंद्रों की क्षमता में बढ़ोतरी की जा रही है। पिछले चार साल से बिजली की दरों में कोई बढ़ोतरी न होना भी एक बड़ी उपलब्धि है।

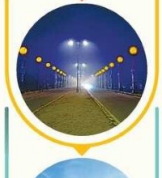

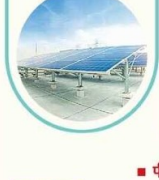

- निजी नलकूप से सिंचाई के बिजली के बिल में 100% छूट
- 'पावर फॉर ऑल' के तहत 1.76 करोड़ घरों में निःशुल्क बिजली कनेक्शन
- 1,21,324 मजरों का विद्युतीकरण करते हुए शत-प्रतिशत मजरों का विद्युतीकरण
- ग्रामीण क्षेत्रों में 18 से 20 घंटे, तहसील मुख्यालय पर 21 से 22 घंटे एवं जनपद मुख्यालय पर 24 घंटे विद्युत आपूर्ति
- 33/11 केवी के 749 नए विद्युत उपकेंद्र स्थापित एवं 1,528 विद्युत उपकेंद्रों की क्षमता में वृद्धि
- स्मार्ट मीटरिंग एवं विद्युत तंत्र के आधुनिकीकरण के लिए रिवैम्पड डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर स्कीम
- खराब ट्रांसफार्मर 24 घंटे में बदलने की व्यवस्था
- अयोध्या एवं वाराणसी का मॉडल सोलर सिटी के रूप में विकसित करने की प्रक्रिया गतिमान
- बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे को 'सोलर एक्सप्रेस-वे' के रूप में विकसित करने का निर्णय
- कम्प्रेस्ड बायोगैस प्लांट, बायो कोल, बायो डीजल/ बायो एथेनॉल की स्थापना को प्रोत्साहन
- गोरखपुर में कम्प्रेस्ड बायोगैस प्लांट की स्थापना
- सौर ऊर्जा नीति-2022 के तहत 5 वर्षों में 22,000 मेगावाट विद्युत उत्पादन का लक्ष्य
- झांसी, ललितपुर, कानपुर नगर, कानपुर देहात, चित्रकूट और जालौन में सोलर पार्क की स्थापना
- 53,354 सोलर पावर पैक संयंत्रों की स्थापना
- 8000 मेगावाट की नई विद्युत परियोजनाओं का निर्माण कार्य प्रगति पर

सौर ऊर्जा		उपभोक्ता/विद्युत संयोजन		विद्युत हानि (प्रति यूनिट)	
2017 तक	2023	2014	2023	2014	2023
288 मेगावाट	2596 मेगावाट	142.64 लाख	336.02 लाख	25.90%	16.60%

■ पीएम कुसुम योजना

प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाअभियान (पीएम कुसुम) योजना के तहत कृषि विभाग में आवेदन कर अपने खेत में वर्ष 2021 में पांच हॉर्स पावर का सोलर पंप लगवाया था। इससे प्रतिदिन डेढ़ बीघे खेत की सिंचाई हो रही है। सरकारी छूट पर मिलने वाला सोलर पंप सिंचाई में राहत देने के साथ ही घर को रोशन करने में कारगर साबित हो रहा है।

गंगा प्रसाद पटेल, प्रयागराज

■ सौभाग्य योजना

पहले मेरे घर में बिजली नहीं थी। परिवार की आर्थिक स्थिति सही न होने के कारण बिजली कनेक्शन लेने में असमर्थ थे। सौभाग्य योजना के तहत निःशुल्क कनेक्शन मिला, जिससे घर रोशन हुआ है। घर में बिजली का सपना 'सौभाग्य योजना' ने पूरा किया है।

सुशीला, महोबा